राष्ट्रीय दैनिक

बुद्ध का संदेश

हिन्दी समाचार पत्र

लखनऊ,कानपुर,कन्नौज,बरेली,सीतापुर,सोनभद्र,गोण्डा,बाराबंकी,बलरामपुर,श्रावस्ती,बहराइच,अम्बेडकरनगर,फैजाबाद, बस्ती, संतकबीरनगर,गोरखपुर,कुशीनगर,देवरिया,महराजगंज,सिद्धार्थनगर में एक साथ प्रसारित।

शेशम माइक-इल फातिमा में ...8

दैनिक बुद्ध का संदेश | 9795951917,9415163471 | @budhakasandesh | budhakasandeshnews@gmail.com | www.budhakasandesh.com

गुरुवार, 15 सितंबर 2022 सिद्धार्थनगर संस्करण | www.budhakasandesh.com | वर्षः 09 अंकः 266 पृष्ठ 8 आमंत्रण मूल्य 2/-रूपया

लखनऊ सुचीबद्ध कोड- SDR-DLY-6849, डी.ए.वी.पी.कोड-133569 | सम्पादक : राजेश शर्मा | उत्तर प्रदेश सरकार एवं भारत सरकार (DAVP) से सरकारी विज्ञापनों के लिए मान्यता प्राप्त

सुशासन बाबू के बिहार में 20 घंटे बाद भी बदमाशों का नहीं मिला कोई सुराग, 7 पुलसकर्मी पर गिरी गाज, धरने पर बैठे गिरिराज

पटना। सुशासन बाबू, बिहार में बहार वाले राज्य के मुख्यमंत्री, लॉ एंड ऑर्डर के प्रति सख्त रहने वाले राजनेता नीतीश कुमार के सूबे में सरेराह बंदूक लहराते अंधाधुंध गोलियां चलाते सिरफिरों का सुराग पुलिस को घटना के 20 घंटे बीत जाने के बाद भी नहीं मिला है। हालांकि धर पकड़ के लिए तीन टीमें बनाईं गई हैं, जो कई जगहों पर छापेमारी कर रही है। वहीं लापरवाही बरतने के आरोप में सात पुलसकर्मियों को सस्पेंड कर दिया गया है। गोलीकांड को लेकर विरोध में अब सड़क पर विरोध शुरू हो गया है। इस बीच केंद्रीय मंत्री गिरिराज सिंह दिल्ली बेगूसराय पहुंच गए हैं और नीतीश सरकार पर लगातार हमलावर हैं। बेगूसराय जिले में अलग-अलग गोलीबारी की घटनाओं में एक व्यक्ति के मारे जाने और नौ अन्य के घायल होने के एक दिन बाद, बिहार पुलिस ने बुधवार को सात पुलिस अधिकारियों को निलंबित कर दिया। बेगूसराय फायरिंग की घटना पर एसपी योगेंद्र कुमार ने कहा कि हमने कल की घटना के आरोपियों का पता लगाने के लिए 4 टीमों का गठन किया है। सभी संदिग्ध स्थानों पर पड़ोसी जिलों में छापेमारी कर रही टीमें। सीसीटीवी चेक किए गए हैं जिनसे हमें अहम जानकारियां मिली हैं। हाल ही में जेल से छूटे सभी लोगों की पहचान की जा रही है, उनसे आम संदिग्धों का पता लगाया जा रहा है। पेट्रोलिंग कारों की प्रभावशीलता के लिए जाँच की गई है जिसमें कमी पाई गई और 7 पीसीआर ऑपरेटरों को उसी के लिए निलंबित कर दिया गया है। सभी सीमाओं को सील कर दिया गया है, चेक पोस्ट लगाए जा रहे हैं, सघन चेकिंग जारी है। 5 को रात से ही हिरासत में लिया गया है, जिनसे पूछताछ जारी है। हम प्राप्त सभी इनपुट पर काम कर रहे हैं। हम सीसीटीवी में दो बाइक पर 4 युवकों को देख सकते हैं जिन्होंने अपराध किया था। हर हर महादेव चौक पर केंद्रीय मंत्री व स्थानीय सांसद गिरिराज धरने पर बैठे हैं। साथ में बीजेपी के कार्यकर्ता भी मौजूद हैं। सड़क पूरी तरह जाम हो गया है। गिरिराज सिंह ने कहा कि घटना के लिए सिर्फ और सिर्फ नीतीश कुमार जिम्मेदार हैं। गिरिराज सिंह ने बिहार सरकार पर जोरदार हमला बोला है। उन्होंने कहा, "बेगूसराय की घटना बिहार के लिए बहुत दुर्भाग्यपूर्ण घटना है। जब से महागठबंधन की सरकार बिहार में बनी है, लॉ एंड ऑर्डर की व्यवस्था पूरी बिगड़ गई है।

गोवा से शुरू हुई कांग्रेस छोड़ो यात्रा

8 विधायकों ने मुख्यमंत्री की मौजूदगी में भाजपा का दामन थामा

पुणे। राहुल गांधी इन दिनों भारत जोड़ो यात्रा निकाल रहे हैं। इस यात्रा से वास्तव में कितने लोग कांग्रेस से जुड़ेंगे यह तो वक्त ही बतायेगा फिलहाल का सच तो यह है कि नेता कांग्रेस को छोड़ते जा रहे हैं। पहले खबरें आती थीं कि किसी राज्य में एक या दो प्रमुख नेता कांग्रेस छोड़ गये लेकिन अब तो सामूहिक रूप से कांग्रेस छोड़ने का सिलसिला शुरू हो गया है। गोवा में कांग्रेस के कुल 11 विधायक हैं जिसमें से 8 विधायक आज कांग्रेस छोड़कर भाजपा में शामिल हो गये। सवाल यह है यदि गोवा से शुरू हुआ कांग्रेस छोड़ो अभियान आगे बढ़ा तो कई और राज्यों में कांग्रेस पार्टी की सेहत पर बुरा असर पड़ सकता है। गोवा में जिन कांग्रेस विधायकों ने मुख्यमंत्री प्रमोद सावंत की उपस्थिति में भाजपा का दामन थामा उनमें पूर्व मुख्यमंत्री दिगंबर कामत, विधानसभा में नेता प्रतिपक्ष माइकल लोबो, दलीला लोबो, राजेश फलदेसाई, केदार नाइक, संकल्प अमोनकर, एलेक्सी सिकेरा और रूडोल्फ फर्नांडीस शामिल हैं। हम आपको याद दिला दें कि अभी कुछ समय पहले जुलाई भी इस तरह की खबरें आई थीं कि गोवा में कांग्रेस के विधायक बड़ी संख्या में भाजपा का दामन थाम सकते हैं लेकिन तब कांग्रेस ने कहा था कि पार्टी के भीतर का विवाद खत्म कर लिया गया है लेकिन विधायकों ने कहा था कि भाजपा में जाना अब सिर्फ समय की बात है। आज जब मुख्यमंत्री प्रमोद सावंत ने कांग्रेस विधायकों का भाजपा में स्वागत किया तो उनकी बॉडी लैंग्वेज भी बता रही थी कि ऑपरेशन लोटस काफी समय से चल रहा था। सावंत ने इस अवसर पर कहा कि गोवा से कांग्रेस छोड़ो यात्रा शुरू हो चुकी है अब इसी तरह से सभी बीजेपी से जुड़ेंगे। बताया जा रहा है कि 68 वर्षीय दिगम्बर कामत ने हाल ही में दिल्ली की यात्रा की थी जिसके बाद यह घटनाक्रम सामने आया। हम आपको बता दें कि इस साल के शुरू में हुए गोवा विधानसभा चुनावोंके दौरान उम्मीदवार तय करते समय कांग्रेस ने सभी को मंदिर, दरगाह, चर्च आदि धार्मिक स्थलों पर ले जाकर शपथ पत्र लिया था कि वह पार्टी को नहीं छोड़ेंगे लेकिन पार्टी के विधायक शपथ पत्र पर कायम नहीं रहे। अब देखना होगा कि इन विधायकों को सावंत सरकार में क्या भूमिकाएं मिलती हैं। हम आपको यह भी याद दिला दें कि गोवा में पिछली विधानसभा के दौरान भी साल 2019 में कांग्रेस के दस विधायक भाजपा में शामिल हो गये थे। वैसे गोवा में आयाराम गयाराम की राजनीति कोई नई बात नहीं है। यह राज्य अपने गठन के समय से ही इस तरह की राजनीति का गवाह रहा है। इस बीच, इस प्रकार की भी रिपोर्टें हैं कि गोवा में कांग्रेस के विधायक दल ने भाजपा में विलय के लिए एक प्रस्ताव पेश किया है। नेता प्रतिपक्ष माइकल लोबो ने सात अन्य विधायकों की मौजूदगी में प्रस्ताव पेश किया और पूर्व मुख्यमंत्री और विधायक दिगंबर कामत तथा अन्य ने इस प्रस्ताव का समर्थन किया है। माना जा रहा है कि यह दांव इसलिए चला गया ताकि विधायकों की विधानसभा सदस्यता पर कोई खतरा नहीं आये। उधर, इस घटनाक्रम से भाजपा की राजनीतिक ताकत में जोरदार इजाफा हुआ है क्योंकि पहले 40 सदस्यीय गोवा विधानसभा में कांग्रेस के 11 जबकि भाजपा के 20 सदस्य थे।

दिल्ली में फ्री बिजली पर अब नया नियम, सब्सिडी चाहिए तो अभी दें मिस्ड कॉल

नई दिल्ली। दिल्ली के मुख्यमंत्री अरविंद केजरीवाल ने घोषणा की है कि 1 अक्टूबर से दिल्ली में केवल उन्ही लोगों को बिजली के बिल पर सब्सिडी मिलेगी जो इसके लिए आवेदन करेंगे। केजरीवाल ने कहा कि जिन्हें सब्सिडी चाहिए वे 30 सितंबर से पहले अप्लाई कर दें। केजरीवाल ने कहा कि उपभोक्ताओं को बिजली सब्सिडी का विकल्प चुनने के लिए ऑनलाइन और ऑफलाइन तरीके उपलब्ध कराए जाएंगे। राष्ट्रीय राजधानी में एक संवाददाता सम्मेलन में उन्होंने कहा कि दिल्ली में बिजली उपभोक्ता आज से सब्सिडी लेने के लिए 7011311111 पर मिस्ड कॉल दे सकते हैं। केजरीवाल ने कहा कि कई लोग दिल्ली में बिजली सब्सिडी छोड़ना चाहते हैं। जो लोग सब्सिडी का लाभ उठाना चाहते हैं उन्हें एक फॉर्म मिलेगा जिसे वे आवेदन करने के लिए भर सकते हैं। वे 7011311111 पर एक मिस्ड कॉल भी दे सकते हैं जिससे उन्हें व्हाट्सएप पर एक फॉर्म मिलेगा जिसे वे आवेदन करने के लिए भर सकते हैं। 31 अक्टूबर तक सब्सिडी के लिए आवेदन करने वालों को महीने की सब्सिडी का भुगतान किया जाएगा। उन्होंने कहा कि हर महीने लोग सब्सिडी के लिए आवेदन कर सकते हैं। केजरीवाल ने यह भी दावा किया कि भाजपा ने पंजाब में आप सरकार के 10 विधायकों से संपर्क किया और आरोप लगाया कि वह विधायकों को खरीद रही है और सरकारें तोड़ रही है। पंजाब में सत्तारूढ़ आप ने मंगलवार को भाजपा पर राज्य में भगवंत मान सरकार को गिराने के प्रयास में अपने प्रत्येक विधायक को 20-25 करोड़ रुपये की पेशकश करने का आरोप लगाया। पंजाब ने भाजपा के आरोपों को षनिराधारष और ष्झूठ का बंडलष करार दिया था और कहा था कि आप अपनी षविफलताओंष से लोगों का ध्यान हटाने की कोशिश कर रही है।

सरकार बताए कि चीन को सौंपा गया क्षेत्र कब वापस लिया जाएगा : राहुल

नयी दिल्ली। कांग्रेस के पूर्व अध्यक्ष राहुल गांधी ने बुधवार को दावा किया कि चीन ने अप्रैल, 2020 की यथास्थिति बहाल करने की भारत की मांग मानने से मना कर दिया है। उन्होंने यह सवाल भी किया कि सरकार को बताना चाहिए कि चीन के नियंत्रण से 1000वर्ग किलोमीटर का क्षेत्र कब वापस लिया जाएगा? उन्होंने ट्वीट किया, चीन ने अप्रैल, 2020 की यथास्थिति बहाल करने की भारत की मांग मानने से मना कर दिया। प्रधानमंत्री ने चीन को, लड़े बिना ही 1000 वर्ग किलोमीटर क्षेत्र सौंप दिया। राहुल ने सवाल किया, क्या भारत सरकार बता सकती है कि यह क्षेत्र कब वापस लिया जाएगा? भारत और चीन की सेनाओं ने पूर्वी लद्दाख में गोगरा-हॉटस्प्रिंग्स क्षेत्र में गश्त चौकी (पेट्रोलिंग प्वाइंट) 15 पर सैनिकों की वापसी प्रक्रिया का संयुक्त सत्यापन किया है। इससे पहले दोनों देशों की सेनाओं ने वहां टकराव वाले बिंदु से अपने सैनिकों को वापस हटाने के साथ अस्थायी बुनियादी ढांचे को खत्म किया था।

भारत जोड़ो यात्राः राहुल ने शिवगिरि मठ का दौरा कर श्री नारायण गुरु को श्रद्धांजलि दी

तिरुवनंतपुरम। कांग्रेस नेता राहुल गांधी पार्टी की "भारत जोड़ो यात्रा" के तहत बुधवार को केरल दौरे के चौथे दिन की शुरुआत करने से पहले तिरुवनंतपुरम में प्रख्यात समाज सुधारक श्री नारायण गुरु को श्रद्धांजलि देने के लिए शिवगिरि मठ गए। शिवगिरि मठ में राहुल ने संन्यासियों से मुलाकात की और संत श्री नारायण गुरु के आगे शीश नवाया। कांग्रेस पार्टी की यह यात्रा तमिलनाडु के कन्याकुमारी से शुरू हुई थी और 150 दिन में 3,570 किलोमीटर का सफर तय कर जम्मू कश्मीर में इसका समापन होगा।

गांधी ने फेसबुक पर यात्रा की तस्वीरें साझा करते हुए कहा, "महान आध्यात्मिक, दार्शनिक और समाज सुधारक श्री नारायण गुरु की समाधि शिवगिरि मठ जाकर श्रद्धांजलि अर्पित की। श्री नारायण गुरु ने लोगों के उत्थान के लिए अथक परिश्रम किया और महात्मा गांधी समेत कई स्वतंत्रता सेनानियों पर उनका प्रभाव रहा।" अखिल भारतीय कांग्रेस समिति के संचार प्रभारी जयराम रमेश ने भी इस पर ट्वीट किया। उन्होंने लिखा, "पदयात्रा शुरू होने से पहले, राहुल गांधी ने श्री नारायण गुरु की समाधि पर श्रद्धांजलि दी जिन्होंने लाखों लोगों के सशक्तीकरण का काम किया था और महात्मा गांधी तथा बी आर आंबेडकर पर उनका गहरा प्रभाव था। वह ऐसे सामाजिक कार्यकर्ता थे जो आज भी प्रेरणास्रोत हैं।"

यात्रा सुबह साढ़े सात बजे नवैकुलम जंक्शन से प्रारंभ हुई, जिसमें बड़ी संख्या में लोग शामिल हुए। तिरुवनंतपुरम जिले में तीन दिन गुजारने के बाद कांग्रेस नेता बुधवार को यात्रा के तहत कोल्लम जिले में पहुंचेंगे।

गुजरात के तट पर 200 करोड़ की ड्रग्स बरामद, छह पाकिस्तानी नागरिक पकड़े गए

अहमदाबाद। गुजरात आतंकवाद रोधी दस्ते ने बुधवार को भारतीय तटरक्षक बल के साथ एक संयुक्त अभियान के दौरान राज्य के तट पर अरब सागर में एक मछली पकड़ने वाली पाकिस्तानी नौका से 200 करोड़ रुपये मूल्य की 40 किलोग्राम हेरोइन जब्त की है। एटीएस के एक वरिष्ठ अधिकारी ने यह जानकारी दी। उन्होंने कहा कि नौका चालक दल के सदस्य छह पाकिस्तानी नागरिकों को भी हिरासत में ले लिया गया है। अधिकारी ने कहा कि कच्छ जिले में जखाऊ बंदरगाह के पास तटरक्षक बल और एटीएस की संयुक्त टीम ने मादक पदार्थ ले जा रही मछली पकड़ने वाली नौका को समुद्र में रोक लिया। उन्होंने कहा, "हेरोइन को गुजरात तट पर उतारे जाने के बाद सड़क मार्ग के जरिए पंजाब ले जाया जाना था। गुप्त सूचना के आधार पर हमने पाकिस्तान से चली नौका को रोका और छह पाकिस्तानी नागरिकों को पकड़ लिया, जिनके पास से 40 किलोग्राम हेरोइन मिली है।" उन्होंने कहा कि जब्त नौका के साथ एटीएस और तटरक्षक बल के अधिकारियों के आज जखाऊ तट पर पहुंचने की उम्मीद है।

अभिषेक बनर्जी के चश्मे की कीमत 86,600 रुपये? बीजेपी नेता ने कहा- चुप रहो, मैं तुम्हारी जीभ खींचकर बाहर निकाल दूंगा

कोलकाता। एसएससी भर्ती घोटाले में पार्थ चटर्जी की गिरफ्तारी और फिर गाय तस्करी मामले में अनुब्रत मंडल गिरफ्तारी जैसी घटनाओं ने विपक्ष के हौसले बुलंद कर दिए हैं और वो बेहद ही आक्रमक तरीके से सरकार पर हमलावर हैं। टीएमसी के अखिल भारतीय महासचिव अभिषेक बनर्जी भी विपक्ष का मुकाबला करने के लिए कड़े शब्दों में हमला बोल रहे हैं। इस बीच बीजेपी अभिषेक पर निशाना साधने में कोई कसर नहीं छोड़ रही है। डायमंड हार्बर सांसद पर विपक्ष के हमले तेज हो गए हैं। हाल ही में बीजेपी नेता रथिंद्र बोस ने अपने फेसबुक पोस्ट में अभिषेक और उनके द्वारा इस्तेमाल किए जाने वाले चश्मे की एक तस्वीर साझा की। उस पोस्ट में उन्होंने कहा था कि अभिषेक के चश्मे की कीमत 86,600 रुपये है। बीजेपी नेता ने पोस्ट में लिखा, श्चुप रहो! अगर मैं राजनीति में नहीं होता तो तुम्हारे मुंह से तुम्हारी जीभ खींचकर बाहर निकाल देता। सिर्फ साजिश कर रहे हैं, सिर्फ साजिश कर रहे हैं। यदि तुम मुझ पर स्याही डालोगे, तो मैं कोलतार डाल दूंगा। एक ही सवाल है – क्या आपकी आंखें इतनी महंगी हैं कि आपको 86,000 रुपए का चश्मा पहनना पड़ रहा है? जबकि बेरोजगार युवाओं का जीवन, उनके परिवारों का जीवन, जिन्हें वह नौकरी नहीं मिली, क्या उनकी कोई कीमत नहीं है? कोयला तस्करी मामले में ईडी के नोटिस पर अभिषेक कुछ दिन पहले कोलकाता के सीजीओ कॉम्प्लेक्स में पेश हुए थे। टीएमसी सांसद की भाभी मेनका गंभीर को भी दिल्ली तलब किया गया है। लेकिन मेनका ने ईडी के समन को चुनौती देते हुए हाई कोर्ट का रुख किया था। उसके बाद हाईकोर्ट ने आदेश दिया कि अभिषेक की भाभी से दिल्ली में नहीं कोलकाता में पूछताछ की जाए।

श्राद्ध करने से उतरता है पूर्वजों का ऋण, इस तरह करें पिंड दान और तर्पण

पितरों का कर्ज चुकाना एक जीवन में तो संभव ही नहीं, उनके द्वारा संसार त्याग कर चले जाने के बाद भी श्राद्ध करते रहने से उनका ऋण चुकाने की परंपरा है। इसमें जो षष्ठी तिथि को श्राद्धकर्म संपन्न करता है उसकी पूजा देवता भी करते हैं। पितृ पक्ष के दौरान दिवंगत पूर्वजों की आत्मा की शांति के लिए श्राद्ध किया जाता है। मान्यता है कि अगर पितर नाराज हो जाएं तो व्यक्ति का जीवन भी खुशहाल नहीं रहता और उसे कई तरह की समस्याओं का सामना करना पड़ता है। यही नहीं घर में अशांति फैलती है और व्यापार व गृहस्थी में भी हानि झेलनी पड़ती है। ऐसे में पितरों को तृप्त करना और उनकी आत्मा की शांति के लिए पितृ पक्ष में श्राद्ध करना जरूरी माना जाता है। पाल बालाजी ज्योतिष संस्थान जयपुर– जोधपुर के निदेशक ज्योतिषाचार्य डा. अनीष व्यास ने बताया कि श्राद्ध के जरिए पितरों की तृप्ति के लिए भोजन पहुंचाया जाता है और पिंड दान व तर्पण कर उनकी आत्मा की शांति की कामना की जाती है। श्राद्ध से जो भी कुछ देने का हम संकल्प लेते हैं, वह सब कुछ उन पूर्वजों को अवश्य प्राप्त होता है। जिस तिथि में जिस पूर्वज का स्वर्गवास हुआ हो उसी तिथि को उनका श्राद्ध किया जाता है जिनकी परलोक गमन की तिथि ज्ञान न हो, उन सबका श्राद्ध अमावस्या को किया जाता है।

ज्योतिषाचार्य डा. अनीष व्यास ने बताया कि शास्त्रों के अनुसार पितृगणों का श्राद्ध कर्म करने के लिए वर्ष में 96 अवसर मिलते हैं। साल के 12 माह में 12 अमावस्या तिथि को भी श्राद्ध किया जा सकता है। श्राद्ध कर्म करने से तीन पीढ़ियों के पूर्वजों को तर्पण किया जा सकता है। श्राद्ध तीन पीढ़ियों तक होता है। श्राद्ध पुत्र, पोता, भतीजा या भांजा करते हैं। जिनके घर में पुरुष सदस्य नहीं हैं, उनमें महिलाएं भी श्राद्ध कर सकती हैं। पितृ पक्ष में सभी तिथियों का अलग–अलग महत्व है। जिस व्यक्ति की मृत्यु जिस तिथि पर होती है, पितृ पक्ष में उसी तिथि पर श्राद्ध कर्म किए जाते हैं। पूर्णिमा तिथि से पितृ पक्ष आरंभ होता है। प्रतिपदा तिथि पर नाना–नानी के परिवार में किसी की मृत्यु हुई हो और मृत्यु तिथि ज्ञात न हो तो उसका श्राद्ध प्रतिपदा पर किया जाता है। पंचमी तिथि पर अगर किसी अविवाहित व्यक्ति की मृत्यु हुई है तो उसका श्राद्ध इस तिथि पर करना चाहिए। अगर किसी महिला की मृत्यु हो गई है और मृत्यु तिथि ज्ञात नहीं है तो उसका श्राद्ध नवमी तिथि पर किया जाता है। एकादशी पर मृत संन्यासियों का श्राद्ध किया जाता है। जिनकी मृत्यु किसी दुर्घटना में हो गई है, उनका श्राद्ध चतुर्दशी तिथि पर करना चाहिए। सर्वपितृ मोक्ष अमावस्या पर ज्ञात–अज्ञात सभी पितरों के लिए श्राद्ध करना चाहिए। जिनकी अकाल मृत्यु हुई हो, उनका श्राद्ध चतुर्दशी तिथि को किया जाता है।

ज्योतिषाचार्य डा. अनीष व्यास ने बताया कि श्रद्धा से किया गया कर्म श्राद्ध कहलाता है। अपने पितरों के लिए श्रद्धा से किए गए मुक्ति कर्म को श्राद्ध कहते हैं। उन्हें तृप्त करने की क्रिया को तर्पण कहा जाता है। तर्पण करना ही पिंडदान करना है। भाद्रपद की पूर्णिमा से अश्विन कृष्ण की अमावस्या तक कुल 16 दिन तक श्राद्ध रहते हैं। इन 16 दिनों के लिए हमारे पितृ सूक्ष्म रूप में हमारे घर में विराजमान होते हैं। श्राद्ध में श्रीमद्भागवत गीता के सातवें अध्याय का माहात्म्य पढ़कर फिर पूरे अध्याय का पाठ करना चाहिए। इस पाठ का फल आत्मा को समर्पित करना चाहिए। श्राद्धकर्म से पितृगण के साथ देवता भी तृप्त होते हैं। श्राद्ध–तर्पण हमारे पूर्वजों के प्रति हमारा सम्मान है। इसी से पितृ ऋण भी चुकता होता है। श्राद्ध के 16 दिनों में अष्टमुखी रुद्राक्ष धारण करें। इन दिनों में घर में 16 या 21 मोर के पंख अवश्य लाकर रखें। शिवलिंग पर जल मिश्रित दुग्ध अर्पित करें। घर में प्रतिदिन खीर बनाएं। भोजन में से सर्वप्रथम गाय, कुत्ते और कौए के लिए ग्रास अलग से निकालें। माना जाता है कि यह सभी जीव यम के काफी निकट हैं। श्राद्ध पक्ष में व्यसनों से दूर रहें। पवित्र रहकर ही श्राद्ध किया जाता है। श्राद्ध पक्ष में शुभ कार्य भी वर्जित माने गए हैं। श्राद्ध का समय

दोपहर में उपयुक्त माना गया है। रात्रि में श्राद्ध नहीं किया जाता। श्राद्ध के भोजन में बेसन का प्रयोग वर्जित है। श्राद्ध कर्म में लोहे या स्टील के पात्रों का प्रयोग नहीं करना चाहिए। पितृदोष जब शांत हो जाता है तो स्वास्थ्य, परिवार और धन से जुड़ी बाधाएं भी दूर हो जाती हैं।

दिन का महत्व

जो पूर्णमासी के दिन श्राद्ध आदि करता है उसकी बुद्धि, पुष्टि, स्मरणशक्ति, धारणाशक्ति, पुत्र–पौत्रादि एवं ऐश्वर्य की वृद्धि होती। वह पर्व का पूर्ण फल भोगता है। प्रतिपदा धन–सम्पत्ति के लिए होती है एवं श्राद्ध करने वाले की प्राप्त वस्तु नष्ट नहीं होती। जो सप्तमी को श्राद्ध आदि करता है उसको महान यज्ञों के पुण्य फल प्राप्त होते हैं। अष्टमी को श्राद्ध करने वाला सम्पूर्ण समृद्धियां प्राप्त करता है। नवमी को श्राद्ध करने से ऐश्वर्य एवं मन के अनुसार अनुकूल चलने वाली स्त्री को प्राप्त करता है। दशमी तिथि का श्रद्धा मनुष्य ब्रह्मत्व की लक्ष्मी प्राप्त कराता है।

श्राद्ध विधि

भविष्यवक्ता और कुण्डली विश्लेषक डा. अनीष व्यास ने बताया कि पौराणिक ग्रंथों के अनुसार श्राद्ध करने की भी विधि ा होती है। यदि पूरे विधि विधान से श्राद्ध कर्म न किया जाए तो मान्यता है कि वह श्राद्ध कर्म निष्फल होता है और पूर्वजों की आत्मा अतृप्त ही रहती है। शास्त्रसम्मत मान्यता यही है कि किसी सुयोग्य विद्वान ब्राह्मण के जरिए ही श्राद्ध कर्म (पिंड दान, तर्पण) करवाना चाहिए। श्राद्ध कर्म में पूरी श्रद्धा से ब्राह्मणों को तो दान दिया ही जाता है साथ ही यदि किसी गरीब, जरूरतमंद की सहायता भी आप कर सकें तो बहुत पुण्य मिलता है। इसके साथ–साथ गाय, कुत्ते, कौवे आदि पशु–पक्षियों के लिए भी भोजन का एक अंश जरूर डालना चाहिए। श्राद्ध करने के लिए सबसे पहले जिसके लिए श्राद्ध करना है उसकी तिथि का ज्ञान होना जरूरी है। जिस तिथि को मृत्यु हुई हो उसी तिथि को श्राद्ध करना चाहिए। लेकिन कभी–कभी ऐसी स्थिति होती है कि हमें तिथि पता नहीं होती तो ऐसे में आश्विन अमावस्या का दिन श्राद्ध कर्म के लिए श्रेष्ठ होता है क्योंकि इस दिन सर्वपितृ श्राद्ध योग माना जाता है। दूसरी बात यह भी महत्वपूर्ण है कि श्राद्ध करवाया कहां पर जा रहा है। यदि संभव हो तो गंगा नदी के किनारे पर श्राद्ध कर्म करवाना चाहिए। यदि यह संभव न हो तो घर पर भी इसे किया जा सकता है। जिस दिन श्राद्ध हो उस दिन ब्राह्मणों को भोज करवाना चाहिए.भोजन के बाद दान दक्षिणा देकर भी उन्हें संतुष्ट करें।

श्राद्ध पूजा दोपहर के समय शुरू करनी चाहिए। योग्य ब्राह्मण की सहायता से मंत्रोच्चारण करें और पूजा के पश्चात जल से तर्पण करें। इसके बाद जो भोग लगाया जा रहा है उसमें से गाय, कुत्ते, कौवे आदि का हिस्सा अलग कर देना चाहिए। इन्हें भोजन डालते समय अपने पितरों का स्मरण करना चाहिए. मन ही मन उनसे श्राद्ध ग्रहण करने का निवेदन करना चाहिए।

इन पांच जीवों का ही चुनाव क्यों किया गया है

भविष्यवक्ता और कुण्डली विश्लेषक डा. अनीष व्यास ने बताया कि पितृपक्ष शुरू हो चुके है और ऐसा माना जाता है कि इस दौरान हमारे पितर धरती पर आकर हमें आशीर्वाद देते हैं। पितृ पक्ष में पितरों का श्राद्ध करना बहुत महत्वपूर्ण माना जाता है। हमारे पितृ पशु पक्षियों के माध्यम से हमारे निकट आते हैं और गाय, कुत्ता, कौवा और चींटी के माध्यम से पितृ आहार ग्रहण करते हैं।

श्राद्ध के समय पितरों के लिए भी आहार का एक अंश निकाला जाता है, तभी श्राद्ध कर्म पूरा होता है। श्राद्ध करते समय पितरों को अर्पित करने वाले भोजन के पांच अंश निकाले जाते हैं गाय, कुत्ता, चींटी, कौवा और देवताओं के लिए।

कुत्ता जल तत्त्व का प्रतीक है, चींटी अग्नि तत्व का, कौवा वायु तत्व का, गाय पृथ्वी तत्व का और देवता आकाश तत्व का प्रतीक हैं। इस प्रकार इन पांचों को आहार देकर हम पंच तत्वों के प्रति आभार व्यक्त करते हैं। केवल गाय में ही एक साथ पांच तत्व पाए जाते हैं। इसलिए पितृ पक्ष में गाय की सेवा विशेष फलदाई होती है।

कुछ बातों का ध्यान रखना भी जरूरी

भविष्यवक्ता और कुण्डली विश्लेषक डा. अनीष व्यास ने बताया कि पितरों को खुश रहने के लिए श्राद्ध के दिनों में विशेष कार्य करना चाहिए वही इस दौरान कुछ बातों का ध्यान रखना भी जरूरी है।

1. श्राद्ध करने के लिए ब्रह्मवैवर्त पुराण जैसे शास्त्रों में बताया गया है कि दिवंगत पितरों के परिवार में या तो ज्येष्ठ पुत्र या कनिष्ठ पुत्र और अगर पुत्र न हो तो नाती, भतीजा, भांजा या शिष्य ही तिलांजलि और पिंडदान देने के पात्र होते हैं।

2. पितरों के निमित्त सारी क्रियाएं गले में दाये कंधे मे जनेउ डाल कर और दक्षिण की ओर मुख करके की जाती है।

3. कई ऐसे पितर भी होते है जिनके पुत्र संतान नहीं होती है या फिर जो संतान हीन होते हैं। ऐसे पितरों के प्रति आदर पूर्वक अगर उनके भाई भतीजे, भांजे या अन्य चाचा ताउ के परिवार के पुरूष सदस्य पितृपक्ष में श्रद्धापूर्वक व्रत रखकर पिंडदान, अन्नदान और वस्त्रदान करके ब्राह्मणों से विधिपूर्वक श्राद्ध कराते है तो पितर की आत्मा को मोक्ष मिलता है।

4. विश्वविख्यात भविष्यवक्ता और कुण्डली विश्लेषक अनीष व्यास ने बताया कि श्राद्ध के दिन लहसुन, प्याज रहित सात्विक भोजन ही घर की रसोई में बनना चाहिए। जिसमें उड़द की दाल, बडे, चावल, दूध, घी से बने पकवान, खीर, मौसमी सब्जी जैसे तोरई, लौकी, सीतफल, भिण्डी कच्चे केले की सब्जी ही भोजन में मान्य है। आलू, मूली, बैंगन, अरबी तथा जमीन के नीचे पैदा होने वाली सब्जियां पितरों को नहीं चढ़ती है।

5. श्राद्ध का समय हमेशा जब सूर्य की छाया पैरो पर पड़ने लग जाए यानी दोपहर के बाद ही शास्त्र सम्मत है। सुबह–सुबह अथवा 12 बजे से पहले किया गया श्राद्ध पितरों तक नहीं पहुंचता है।

पितरों के लिए श्रद्धा एवं कृतज्ञता प्रकट करने वाले को कोई निमित्त बनाना पड़ता है। यह निमित्त है श्राद्ध। पितरों के लिए कृतज्ञता के इन भावों को स्थिर रखना हमारी संस्कृति की महानता को प्रकट करता है। देवस्मृति के अनुसार श्राद्ध करने की इच्छा करने वाला व्यक्ति परम सौभाग्य पाता है।

एकादशी का श्राद्ध सर्वश्रेष्ठ दान

भविष्यवक्ता और कुण्डली विश्लेषक डा. अनीष व्यास ने बताया कि श्राद्ध न किया जाए तो पितर गृहस्थ को दारुण शाप देकर पितृलोक लौट जाते है। एकादशी का श्राद्ध सर्वश्रेष्ठ दान है। वह समस्त वेदों का ज्ञान प्राप्त कराता है। उसके सम्पूर्ण पापकर्मों का विनाश हो जाता है तथा उसे निरंतर ऐश्वर्य की प्राप्ति होती है।

वहीं, द्वादशी तिथि के श्राद्ध से राष्ट्र का कल्याण तथा प्रचुर अन्न की प्राप्ति कही गई है। त्रयोदशी के श्राद्ध से संतति, बुद्धि, धारणाशक्ति, स्वतंत्रता, उत्तम पुष्टि, दीर्घायु तथा ऐश्वर्य की प्राप्ति होती है।

ऐसे करें श्राद्ध

– श्राद्ध करने के लिए किसी ब्राह्मण को आमंत्रित करें, भोज कराएं और अपनी सामर्थ्य के अनुसार दक्षिणा भी दें।

– श्राद्ध के दिन अपनी सामर्थ्य या इच्छानुसार खाना बनाएं। – आप जिस व्यक्ति का श्राद्ध कर रहे हैं उसकी पसंद के मुताबिक खाना बनाएं जो उचित रहेगा। – मान्यता है कि श्राद्ध के दिन स्मरण करने से पितर घर आते हैं और अपनी पसंद का भोजन कर तृप्त हो जाते हैं।

– खाने में लहसुन–प्याज का इस्तेमाल न करें। – शास्त्रों में पांच तरह की बलि बताई गई हैः गौ (गाय) बलि, श्वान (कुत्ता) बलि, काक (कौवा) बलि, देवादि बलि, पिपीलिका (चींटी) बलि।

शोधकर्ताओं ने किया कोशकीय प्रक्रियाओं से जुड़ा अहम खुलासा

पतली चादरों और झिल्लियों को त्रि–आयामी (3डी) आकार देना सामग्री–विज्ञान की एक ऐसी विशेषता है, जो बड़े पैमाने पर आकारिकी से लेकर आणविक दवा वितरण तक, विविध जैविक प्क्रियाओं को रेखांकित करती है। विशिष्ट 3डी आकृतियों के बीच कोशिका झिल्ली की निर्बाध परिवर्तनशीलताय कोशिका विभाजन, कोशिका गतिशीलता, कोशिकाओं में पोषक तत्वों के परिवहन, और वायरल संक्रमण जैसी जैविक घटनाओं में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। भारतीय विज्ञान संस्थान (आईआईएससी), बेंगलूरू के शोधकर्ताओंय और उनके सहयोगियों ने अपने एक ताजा अध्ययन में दिखाया है कि वास्तविक स्थिति में ऐसी प्रक्रियाएं कैसे होती हैं।

शोधकर्ताओं ने कोलाइडल झिल्ली का अध्ययन किया है, जो संरेखित, रॉड जैसे कणों की माइक्रोमीटर–मोटी परत होती है। कोलाइडल झिल्ली, अध्ययन के लिए अधिक ट्रैक्टेबल सिस्टम प्रदान करती है, क्योंकि इसमें कोशिका झिल्ली के समान गुण पाये जाते हैं। किसी प्लास्टिक शीट, जहाँ सभी अणु गतिहीन होते हैं, के विपरीत कोशिका झिल्ली द्रव की परतों से मिलकर बनी होती हैं, जिसमें प्रत्येक घटक फैलने के लिए स्वतंत्र होता है। भौतिकी विभाग, आईआईएससी में एसोसिएट प्रोफेसर और प्रोसीडिंग्स ऑफ द नेशनल एकेडेमी ऑफ साइंसेज में प्रकाशित अध्ययन से जुड़ी शोधकर्ता प्रेरणा शर्मा बताती हैं – ष्यह कोशिका झिल्लियों का एक प्रमुख गुण है, जो हमारी नई (कोलाइडल झिल्ली) प्रणाली में भी उपलब्ध है।ष

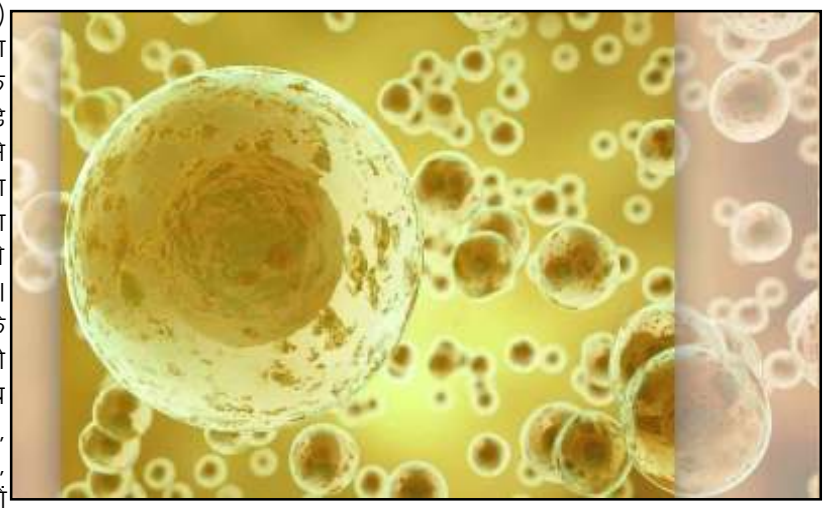

इस अध्ययन में, कोलाइडल झिल्ली 1.2 माइक्रोमीटर और 0.88 माइक्रोमीटर रॉड के आकार के वायरस का घोल तैयार करके बनायी गई थी। शोधकर्ताओं ने दिखाया है कि घोल में छोटी छड़ों का अंश बढ़ाये जाने पर कोलाइडल झिल्लियों का आकार कैसे बदलता है। आईआईएससी के भौतिकी विभाग में पीएचडी शोधार्थी, और इस अध्ययन की प्रमुख शोधकर्ता अयंतिका खानरा बताती हैं– ष्हमने दो वायरस के अलग–अलग संस्करणों को मिलाकर कई नमूने बनाये, और फिर माइक्रोस्कोप से उनका अध्ययन किया है।ष

जब छोटी छड़ों का अनुपात 15: से बढ़ाकर 20–35: के बीच किया गया, तो झिल्ली एक सपाट डिस्क जैसी आकृति से एक काठी (ककसम) जैसी आकृति में परिवर्तित हो गई। समय के साथ, झिल्लियां आपस में मिलने लगीं, और आकार में बढ़ने लगीं। शोधकर्ताओं ने देखा कि जब काठी विलीन हो गई, तो उन्होंने उसी या उच्च क्रम की एक बड़ी काठी का निर्माण किया। हालाँकि, जब वे अपने किनारों से दूर, लगभग समकोण पर विलीन हो गए, तो अंतिम विन्यास एक कैटेनॉइड जैसी आकृति के रूप में उभरकर आया। कैटेनॉयड्स फिर अन्य काठी के साथ विलय हो गए, जिसने ट्रिनोइड्स और फोर–नोइड्स जैसी जटिल संरचनाओं को जन्म दिया।

झिल्ली के व्यवहार की व्याख्या करने के लिए, शोधकर्ताओं ने एक सैद्धांतिक मॉडल भी प्रस्तावित किया है। उनका कहना है कि ऊष्मप्रवैगिकी (जैमतउवकलदंउपबे) के नियमों के अनुसार, सभी भौतिक प्रणालियाँ निम्न–ऊर्जा विन्यास की ओर बढ़ती हैं। उदाहरण के लिए, पानी की बूँद गोलाकार आकार ग्रहण करती है, क्योंकि इसमें ऊर्जा कम होती है। इसी तरह, झिल्लियों के लिए, छोटे किनारों वाली आकृतियाँ, जैसे कि सपाट डिस्क, अधिक अनुकूल हैं। एक अन्य गुण, जो झिल्ली विन्यास को परिभाषित करने में भूमिका निभाता है, वह है गाऊसी वक्रता मापांक। अध्ययन में स्पष्ट हुआ है कि छोटी छड़ों के अंश में वृद्धि होने पर झिल्लियों का गाऊसी वक्रता मापांक बढ़ जाता है। इससे पता चलता है कि अधिक छोटी छड़ें जोड़ने से झिल्लियाँ कम ऊर्जा वाली काठी जैसी आकृतियों में क्यों परिवर्तित होने लगती हैं।

शर्मा बताती हैं– ष्हमने द्रव झिल्ली की वक्रता के निर्माण के लिए एक नया तंत्र प्रस्तावित किया है। गाऊसी मापांक को बदलकर वक्रता को ट्यून करने का यह तंत्र जैविक झिल्लियों में भी काम कर सकता है।ष वह आगे बताती हैं कि वे अध्ययन जारी रखना चाहती हैं, जिससे यह पता लगाया जा सके कि झिल्ली घटकों में अन्य सूक्ष्म परिवर्तन बड़े पैमाने पर उसके गुणों को कैसे प्रभावित करते हैं।

आर्मी स्कूल में निकली भर्ती, अक्टूबर की इस तारीख तक कर सकते हैं आवेदन

अगर आप हमेशा ही एक स्कूल टीचर बनने का सपना देखते हैं तो अब आपके लिए एक बेहतरीन मौका है। आप एक सरकारी टीचर की नौकरी पा सकते हैं। जी हां, हाल ही में आर्मी स्कूल में टीचर के विभिन्न पदों की भर्ती के लिए आवेदन मांगे गए हैं। आर्मी वेलफेयर एजुकेशन सोसाइटी अर्थात् एडब्ल्यूईएस ने पीजीटी, टीजीटी और पीआरटी के पदों पर भर्ती निकाली है। अगर आप इन पदों पर नौकरी पाना चाहते हैं, तो ऐसे में आप 5 अक्टूबर 2022 तक आवेदन कर सकते हैं। तो चलिए विस्तारपूर्वक जानते हैं इस जॉब के बारे में–

कब और कहां कर सकते हैं आवेदन

इन पदों के लिए आवेदन करने के लिए आपको मेपदकपं.बवउ या तमहपेजमत.बइजम•ंउे वेबसाइट पर जाना होगा। वहां पर आप फॉर्म भरकर ऑनलाइनर आवेदन कर सकते हैं। बता दें कि रजिस्ट्रेशन की प्रक्रिया 25 अगस्त से शुरू हो चुकी हैं और आवेदन की अंतिम तिथि 5 अक्टूबर 2022 है।

जानिए एडमिट कार्ड की तिथि

आवेदन करने के पश्चात् एडमिट कार्ड 20 अक्टूबर 2022 तक उपलब्ध हो जाएंगे और परीक्षा 5 और 6 नवंबर 2022 को संपन्न होगी। वहीं, रिजल्ट जारी होने की तारीख 20 नवंबर 2022 है। उम्मीदवारों का चयन ऑनलाइन स्क्रीनिंग टेस्ट, इंटरव्यू, टीचिंग स्किल व कंप्यूटर टेस्ट के आधार पर किया जाएगा।

आवश्यक योग्यता

विभिन्न पदों पर आवेदन के लिए अलग–अलग योग्यताओं का होना आवश्यक है। मसलन, अगर आप पीजीटी के लिए आवेदन कर रहे हैं तो कम से कम 50 फीसदी अंकों के साथ पोस्ट ग्रेजुएशन होना चाहिए। इसके अलावा, 50 फीसदी अंकों के साथ बीएड होना चाहिए। वहीं, टीजीटी पद के लिए कम से कम 50 फीसदी अंकों के साथ ग्रेजुएट और बीएड होना चाहिए। इसी तरह अगर आप पीआरटी पद के लिए आवेदन कर रहे हैं, तो आपके पास 2 साल का **D-El-Ed-/ B-El-Ed** डिप्लोमा होना चाहिए। या फिर छह माह का **PDPET** कोर्स कर चुके व्यक्ति भी आवेदन कर सकते हैं।

उम्र सीमा का भी रखें ध्यानः अगर आप इन पदों के लिए आवेदन कर रहे हैं तो आपको उम्र का भी ध्यान रखना चाहिए। फ्रेशर की अधिकतम उम्र 40 वर्ष है। वहीं, अनुभवी उम्मीदवार की उम्र 57 साल से कम होनी चाहिए। ऐसे उम्मीदवार का संबंधित कैटेगरी में पिछले 10 वर्षों में न्यूनतम 5 वर्ष का अनुभव होना चाहिए।

रियलिटी चेक जरूरी है

इस उपलब्धि की घड़ी में भी इस बात को नजरअंदाज नहीं किया जा सकता कि निर्माण प्रक्रिया में लगभग 18 साल लग गए। इस अवधि में चीन हमसे काफी आगे निकल चुका है। भारतीय नौ सेना में दूसरे विमानवाहक जंगी जहाज–विक्रांत का शामिल होना निश्चित रूप से एक ऐसा मौका है, जिससे हर भारतीय पहले की तुलना में अधिक आश्वस्त रहेगा। अफसोसनाक यह है कि आज के ध्रुवीकृत भारत में चाहे उपलब्धि हो या विफलता– किसी बात साझा सुख या दुख का माहौल नहीं बनता। हर मौके पर दो कथानक उभर आते हैं। विक्रांत के नौसेना में शामिल होने का मौका भी इसका अपवाद नहीं रहा। इन स्थितियों के लिए बेशक एक बड़ी वजह वर्तमान सरकार की यह सोच है कि भारत की कथा असल में 2014 में नरेंद्र मोदी के नेतृत्व में भाजपा की जीत के बाद शुरू होती है। उसके पहले कुछ नहीं था।

वरना, प्रधानमंत्री मोदी विक्रांत को ष्आत्म–निर्भर भारतष की उपलब्धि बताने के बजाय यह बताते कि इसके निर्माण को हरी झंडी पूर्व अटल बिहारी वाजपेयी सरकार ने दी थी। पूर्व मनमोहन सिंह सरकार के समय इसका जलावतरण हो गया था। अब इसे नौसेना को सौंपा गया है। बहरहाल, इस उपलब्धि की घड़ी में भी इस बात को नजरअंदाज नहीं किया जा सकता कि इस सारी प्रक्रिया में लगभग 18 साल लग गए।

नौसैनिक मामलों में भारत का मुख्य प्रतिद्वंद्वी चीन है। वह इस अवधि में हमसे काफी आगे निकल चुका है। इस हकीकत से वाकिफ होने के लिए इस तथ्य पर ध्यान देना काफी होगा कि चीन के पास कुल 355 जहाज हैं, जबकि भारत के पास सिर्फ 44 हैं। उपलब्ध आंकड़ों के मुताबिक चीन के पास तीन विमानवाहक जहाज, 48 डिस्ट्रॉयर, 43 फ्रिगेट और 61 कोर्वेट हैं। भारत के पास 10 डिस्ट्रॉयर, 12 फ्रिगेट और 20 कोर्वेट हैं।

जाहिर है, विक्रांत के भी नौसेना में भर्ती किए जाने के बावजूद भारत अभी चीन से युद्ध के लिए तैयार अवस्था में नहीं है। फिलहाल, विक्रांत के पास अपने लड़ाकू विमान नहीं होंगे। इसलिए भारत के पास अभी मौजूद जंगी जहाज विक्रमादित्य से हटा कर विमानों को उस पर तैनात किया जाएगा। विक्रांत के लिए करीब 24 विमान खरीदे जाने हैं। लेकिन कॉन्ट्रैक्ट अभी तक दिया नहीं गया है। विशेषज्ञों ने ध्यान दिलाया है कि भारत में अलग–अलग निर्णय लेने की प्रक्रिया के कारण विमानों का चयन जहाज की परियोजना से अलग हो गया।

जिलाधिकारी ने औषधि विभाग को बाजारो में दुकानो को चेक करने का दिया निर्देश

दैनिक बुद्ध का संदेश

सिद्धार्थनगर। राजस्व कार्यो, को लेकर समीक्षा बैठक जिलाधिकारी संजीव रंजन की अध्यक्षता एवं अपर जिलाधिकारी (वि0ध्रा0) उमाशंकर की उपस्थिति में कलेक्ट्रेट सभागार में सम्पन्न हुई। जिलाधिकारी संजीव रंजन ने समस्त उपजिलाधिकारियों तहसीलदार को निर्देश देते हुए कहा कि सभी कोर्ट केस अपडेट करे। जिलाधिकारी संजीव रंजन ने बैठक में उपस्थित समस्त एस0डी0एम0 व तहसीलदार को निर्देश दिया कि तहसीलों की मासिक रिपोर्ट भेजने का निर्देश दिया। जिलाधिकारी ने समस्त तहसीलदारों को निर्देश दिया कि राजस्व की वसूली मे तेजी लाकर शत–प्रतिशत लक्ष्य पूर्ण करे। जिलाधिकारी संजीव रंजन ने जिला आबकारी अधिकारी को शासन से प्राप्त लक्ष्य के सापेक्ष शत–प्रतिशत वसूली बढ़ाने का निर्देश दिया। इसके साथ ही बाट–माप, परिवहन, विद्युत को कैम्प लगाकर वसूली बढ़ाने का निर्देश दिया। जिलाधिकारी ने बाट–माप तथा खाद्य सुरक्षा एवं औषधि प्रशासन विभाग को बाजारो में दुकानो को चेक करने का निर्देश दिया। वाणिज्य कर, आबकारी, परिवहन, विद्युत, खनन विभागो का लक्ष्य के सापेक्ष वसूली कम होने पर नाराजगी व्यक्त करते हुए लक्ष्य बढ़ाने का निर्देश दिया गया। इसके अलावा स्टाम्प कर, भू– राजस्व वसूली, व्यापार कर, वन विभाग, मण्डी समिति, खनन विभाग, आय, जाति एवं निवास प्रमाण पत्र तथा अन्य विभागों की समीक्षा की गयी तथा शत–प्रतिशत लक्ष्य पूर्ण कराये जाने का निर्देश दिया गया। इसके अलावा आई0जी0आर0एस0 की भी समीक्षा की गयी। इस बैठक में उपरोक्त के अतिरिक्त समस्त उपजिलाधिकारी, समस्त तहसीलदार, ए0आ0जी0 स्टाम्प राजेश सिंह, ए0आर0टी0ओ0, अधिशासी अभियन्ता विद्युत सिद्धार्थनगर, जिला आबकारी अधिकारी, प्रशासनिक अधिकारी कलेक्ट्रेट सूर्यलता श्रीवास्तव, उमाकान्त मिश्र, दिलीप कुमार तथा अन्य सम्बन्धित अधिकारी उपस्थित थे।

हिन्दी दिवस पर विचार गोष्ठी का आयोजन

दैनिक बुद्ध का संदेश

डुमरियागंज/सिद्धार्थनगर। बुद्धवार को हिंदी दिवस के अवसर पर डुमरियागंज में एक विचार गोष्ठी का आयोजन किया गया जिसमें वक्ताओं ने हिंदी भाषा के बारे में अपने विचार व्यक्त किए। नगर पंचायत सभागार में आयोजित गोष्ठी में बतौर मुख्य अतिथि डॉ रविन्द्र मिश्रा ने कहा कि हिंदी हमारे देश की भाषा है हिन्दी हम सब की भाषा है ये हमारी संस्कृति है हमारी धरोहर है आजकल के जमाने में हिंदी भाषा को तोड़ मरोड़ कर पेश किया जा रहा है यह बहुत दुर्भाग्यपूर्ण है जो ना तो हमारे लिए अच्छा है ना ही देश के लिए हिंदी से मोह करने की आवश्यकता है। विचार गोष्ठी में जिलाध्यक्ष आलोक श्रीवास्तव, राजेश पांडेय, ठाकुर प्रसाद मिश्र, पप्पू रिज्वी, अजय पांडेय, ज्ञानेश्वर पांडेय (मगन), असगर जमील, पंकज दूबे, लकी शुक्ल, काजी रहमतुल्लाह, राकेश यादव, आफताब आलम, आदि तमाम पत्रकार एवं सामाजिक लोग मौजूद रहे।

गांव व शहरो में सरकार सड़को का जाल बिछा रही है:सांसद जगदंबिका पाल

दैनिक बुद्ध का संदेश

इटवा/सिद्धार्थनगर। जब से केन्द्र व प्रदेश में भाजपा की सरकार बनी है तब से गांव व शहरो में सड़को का जाल बिछाया जा रहा है। उक्त बाते डुमरियागंज लोक सभा के सांसद जगदंबिका पाल ने कही व विकासखंड खुनियांव के पचमोहनी से दुबायल पाण्डेय तिघरा घाट मार्ग लगभग 331. 64 लाख की लागत से ग्रामीण अभियन्त्रण विभाग से बनाई जा रही सड़क के शिलान्यास अवसर पर पचमोहनी चौराहे पर जनता को संबोधित करते हुए कही उन्होंने कहा की भाजपा की सरकार बनने के पहले उत्तर–प्रदेश व सिद्धार्थनगर जनपद की सड़कों की स्थिति बहुत खराब थी मगर योगी सरकार बनते ही पूरे प्रदेश में सड़कों की जाल जाल बिछा दिया गया कोविड़ के समय 135 करोड लोगों को कोविड़ से बचाने के लिए 200 करोड़ लोगो को मुफ्त टीकाकरण कराकर लोगों की जान बचाने का कार्य किया गया कोविड़ के समय किसी व्यक्ति की भोजन के अभाव में जान न जाए उसके लिए मुफ्त राशन की व्यवस्था कराई गयी वही भारत की अर्थव्यवस्था को भी दुनिया के सामने टाप पर रखकर प्रधानमंत्री ने भारत का लोहा मनवाया मौके पर मदन सिह, बालमुकुन्द पाण्डेय, शैलेन्द्र ब्रिकम सिह, ओमप्रकाश पाण्डेय, राधेश्याम गुप्ता, राम निवास उपाध्याय, अखिलेश मौर्या, फतेह बहादुर सिंह, हदयराम पाठक, सूर्य प्रताप सिह, रामकुमार पाण्डेय, गब्बू, फूलचन्द यादव, अंखण्ड पाल सिह, नगेन्द यादव, गुडडू सिह, अमरेन्द्र सिह, मनोज चौबे, हरिकेश पाडेय, आदि उपस्थित रहे।

खण्ड विकास अधिकारी आनंद कुमार गुप्ता का बांसी में भव्य स्वागत

दैनिक बुद्ध का संदेश

बांसी/सिद्धार्थनगर। बुधवार को विकास खण्ड खुनियांव से स्थानांतरित हुए आनंद कुमार गुप्ता ने विकास खण्ड बांसी के खण्ड विकास अधिकारी का पद भार ग्रहण किया। विकास खण्ड के विभागी अधिकारियों और कर्मचारियों द्वारा उनका माल्यार्पण व बुके भेंट कर स्वागत किया। वहीं नवागत खण्ड विकास अधिकारी आनंद कुमार गुप्ता ने सभी अधिकारियों व कर्मचारियों का परिचय लेने के उपरान्त विभागीय कार्यो की समीक्षा किया और विकास खण्ड परिसर का निरीक्षण किया तथा विभागीय अधिकारी कर्मचारियों को आवश्यक दिशा निर्देश दिया। इस मौके पर सहायक विकास अधिकारी अजय राय सहित हरिशंकर वर्मा, संजय कुमार चौरसिया, ओमप्रकाश द्विवेदी, परशुराम मणि त्रिपाठी, विजय तिवारी, प्रशांत राय, रिंकू कश्यप, रवि कपूर राव सहित तमाम ब्लॉक कर्मचारीयों ने स्वागत किया।

नेत्र जाँच शिविर में पाए गए 18 मोतियाबिंद के मरीज

दैनिक बुद्ध का संदेश

सोहास/सिद्धार्थनगर। पूर्वांचल ग्रामीण सेवा समिति और एस बी आई फाउंडेशन के द्वारा ग्राम पंचायत धौरीकुइयां के मिनी सचिवालय में कुशल डॉक्टर द्वारा नेत्र जाँच एवं सामान्य जाँच शिविर का आयोजन किया गया। जिसमें 60 ग्रामीणों का सफल नेत्र जाँच किया गया। स्वास्थ्य सेवा आप के द्वार के तहत पूर्वांचल ग्रामीण सेवा संस्थान एवं एस बी आई फाउंडेशन द्वारा फातिमा हॉस्पिटल से आये डॉक्टर एवं नर्सों के द्वारा नेत्र एवं स्वास्थ्य परीक्षण किया गया। जिसमें कुल 60 लोगों को जाँच किया गया। जिसमें से 18 लोगों को मोतिया बिन्द चिन्हित किया गया। जिन्हें गोरखपुर बुलाकर मोतियाबिंद का सफल ऑपरेशन किया जाएगा। कार्यक्रम के दौरान डॉक्टर गौतम, फार्माशिस्ट अजहरुद्दीन एवं एस बी आई कोऑर्डिनेटर अंकित सैमशन, सिस्टर सोरुबा, रोमिल, ग्राम प्रधान प्रतिनिधि विश्वम्भर यादव, राम अधीन पासवान एवं सहयोगी स्टाफ बाला कान्त, घनश्याम सिंह, सोहित, गणेश के अलावा ग्रामीण चीनक, हरेखा, सीताराम, आशादेवी, ऊधो, जोखन, रामललित, अब्दुल हाफिज आदि लोग उपस्थित रहे।

इन्वर्टर की चपेट में आने से 55 वर्षीय महिला की दर्दनाक मौत

इन्वर्टर ऑन करते समय विद्युत के चपेट मे आई महिला, आनन फानन में परिजनों ने पहुँचाया नजदीकी सामुदायिक स्वास्थ्य केन्द्र, रास्ते में ही तोड़ा दम

दैनिक बुद्ध का संदेश

शोहरतगढ़/सिद्धार्थनगर। तहसील क्षेत्र के जोगिया ब्लॉक अंतर्गत ग्राम पंचायत बरैनिया में 55 वर्षीय एक महिला इनवर्टर ऑन करते समय विद्युत की चपेट में आ गयी, इलाज के लिए परिजन उसे हॉस्पिटल पहुचाते ही रास्ते मे उसकी मौत हो गयी। घटना स्थल से मिली जानकारी के मुताबिक बरैनिया निवासी मोमिना खातून पत्नी मोहम्मद इस्लाम उम्र करीब 55 वर्ष शाम की नमाज पढ़ने के लिए उजु आदि बनाकर इनवर्टर ऑन करने गयी, इसी बीच स्विच दबाते समय वह विद्युत के चपेट में आ गयी। बताया जाता है कि 55 वर्षीय महिला की वही मौत हो गयी थी, लेकिन आनन फानन में उसे शोहरतगढ़ के सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र पर ले जाया गया, जहां डॉक्टरों ने कहा कि करीब 1 घण्टा पहले की महिला की मौत हो चुकी है। घटना शाम करीब 6 बजे की बताई जाती है। विदित हो कि 5 लड़के और 2 लड़कियों में 2 लड़के इस्तेखार अहमद, अजहर अहमद की शादी नहीं हुई है। घटना से परिजनों का रो–रोकर बुरा हाल है। घटना को लेकर हल्का लेखपाल अब्दुल कयूम ने बताया कि क्षेत्र में हृदयविदारक घटना घटी है, घटना की जाँच रिपोर्ट उच्च अधिकारियों को भेजकर कार्यवाही की जा रही है। मौके पर पहुँचे सांसद प्रभारी सूर्य प्रकाश पाण्डेय ने कहा कि इस दुःख की घड़ी में पूरी टीम पीड़ित परिजन के साथ है। शासन स्तर से मदद के लिए हर संभव प्रयास किए जाएंगे, आज ही घटना की सूचना सांसद साहब को दी गयी है। इस दौरान ग्राम प्रधान नईम समाजसेवी इसरार आदि मौजूद रहे।

ग्रामीणो ने प्रशासन से की लेखपाल की शिकायत,कार्यवाही की मांग

दैनिक बुद्ध का संदेश

सोहास/सिद्धार्थनगर। सदर तहसील अंतर्गत ग्राम पंचायत गनेरा टोला बरोंहिया खालसा निवासी श्याम सुंदर जयसवाल ने शासन प्रशासन न्याय दिलाने को मांग की है। उक्त व्यक्ति ने जिलाधिकारी एवं अन्य अधिकारियों से लिखित शिकायती पत्र दिया है कि उसके ग्राम पंचायत में तैनात वर्तमान लेखपाल द्वारा उसी के घर के परिवार वालों का जाति, निवास और आय प्रमाण पत्र का ऑनलाइन आवेदन किया था। जिसको वर्तमान लेखपाल ने निरस्त कर दिया।

जिससे शिकायत कर्ता के घर के लोगों को शिक्षा में मिलने वाला लाभ से वंचित हो गया। जिसको लेकर प्रार्थी जिलाधिकारी को जनसुनवाई पोर्टल पर शिकायत किया। इसके अलावा लिखित में उप जिलाधिकारी नौगढ़ को भी शिकायत किया है। इसके साथ दो बार मुख्यमंत्री हेल्पलाइन पर फोन किया गया था। लेकिन शासनध्प्रशासन द्वारा कोई कार्यवाही नहीं किया गया। अगर ऐसी स्थिति रही लोगों का विश्वास न्याय से उठ जाएगा। जिसके पश्चात लेखपाल द्वारा प्रार्थी को दिनांक 6 सितम्बर 2022 को फोन करके धमकी भी दिया गया। जिसकी रिकॉर्डिंग सोशल मीडिया पर खूब वायरल हो रहा है। उक्त व्यक्ति ने शासनध्प्रशासन से उक्त लेखपाल के खिलाफ जांच कर उचित कार्यवाही करने की मांग की है।

सम्पादकीय

गलत बातों का जवाब तथ्यों के साथ तो देना चाहिए, लेकिन विवादों में बहुत ज्यादा उलझ कर अपनी शक्ति और सामर्थ्य गंवाने का कोई अर्थ नहीं है। कांग्रेस को यह याद रखना चाहिए कि उसका मकसद क्षुद्र स्वार्थ की राजनीति से कहीं अधिक विशाल है। कांग्रेस भारत के विचार को पुन: स्थापित करने के लिए...

महंगाई और भारत जोड़ो यात्रा

चल तो भारत रहा है, इसमें राहुल महज एक सहयात्री हैंभारत जोड़ो यात्रा और भारत का विचार देश में महंगाई दर लगातार आठवें महीने भारतीय रिजर्व बैंक के तय लक्ष्य सीमा से ऊपर बनी हुई है। सरकार ने महंगाई दर को दो से 6 प्रतिशत के दायरे में रखने का लक्ष्य निर्धारित किया है। लेकिन इस लक्ष्य को पूरा करने के लिए कोई मजबूत कदम नहीं उठाए जा रहे हैं, इस वजह से खुदरा महंगाई दर काबू में आ ही नहीं रही है। अप्रैल, मई और जून में महंगाई दर लगातार 7 प्रतिशत से ऊपर रही, जुलाई में थोड़ा नीचे आकर 6.71 प्रतिशत पर आई थी, लेकिन अगस्त के आंकड़े बताते हैं कि खुदरा महंगाई दर 7 प्रतिशत तक पहुंच गई है। इसका सीधा मतलब ये है कि अभी डेयरी पदार्थ, अनाज, फल, सब्जी, तेल किसी की कीमत में कोई राहत नहीं मिलेगी। बल्कि त्यौहारी मौसम होने से महंगाई का दंश कुछ और अधिक तकलीफ देगा। उच्च मध्यमवर्ग और क्रीमी लेयर के लोगों के लिए ऐसे आंकड़ों का कोई अर्थ नहीं होता, क्योंकि उन्हें महंगाई से कभी कोई तकलीफ नहीं होती। उनकी संपन्नता में हर तकलीफ का इलाज मिल जाता है। मगर आम भारतीयों को जब 40 रुपए की चीज सौ में खरीदनी पड़े, तो आर्थिक मजबूरी और विपन्नता का अहसास और बढ़ जाता है। अफसोस इस बात का है कि सत्ता की आसंदी पर बैठे लोगों को भी संपन्नता की सहूलियतें नजर आती हैं, गरीबों के दर्द उन्हें नहीं दिखते। यही कारण है कि संसद में महंगाई जैसे अहम सवाल पर चर्चा से बचने के तरीके ढूंढे जाते हैं। अगर चर्चा हो भी तो महंगाई है, यह बात स्वीकार नहीं की जाती। अगर सरकार महंगाई को देशव्यापी समस्या मानकर उस पर काम करना शुरु कर दे, तो फिर महंगाई पर लगाम कसनी शुरु हो जाएगी, लेकिन ऐसा नहीं हो रहा। बल्कि अभी गैरजरूरी बातों पर राजनैतिक विमर्श हो रहे हैं। सड़क का नाम राज से शुरु हो या कर्तव्य से, कहां किसकी मूर्ति लगाई जाए, अतीत में किसने क्या कहा, इसका वर्तमान में हिसाब लिया जाए और यह भी कम हो तो किसने कौन से टी शर्ट पहनी, इस पर बड़ी–बड़ी बहसें हों, जब देश का राजनैतिक परिदृश्य ऐसा बन गया है, तब महंगाई या बेरोजगारी की गंभीर समस्या पर चर्चा की गुंजाइश कहां रह जाती है। गनीमत है कि जो काम सरकार नहीं कर रही, कम से कम विपक्ष उस मुद्दे को गुम नहीं होने दे रहा है। राहुल गांधी के नेतृत्व में निकल रही भारत जोड़ो यात्रा में महंगाई भी एक अहम मुद्दा है। इस यात्रा ने किलोमीटर का शतक पूरा कर लिया है, यानी सौ किमी से अधिक दूरी तक राहुल गांधी और उनके साथ चल रहे बाकी यात्रियों ने पदयात्रा पूरी कर ली है। सुबह–शाम चलने के बावजूद राहुल गांधी समेत किसी यात्री के चेहरे पर थकान नहीं दिख रही है। किसी के पैर में छाले बन गए, किसी की एड़ियों से खून निकल रहा है, लेकिन मजाल है कि ऐसी कोई भी शारीरिक तकलीफ भारत जोड़ो यात्रा के उत्साह को कम कर पा रही हो। पिछले सात दिनों में इस यात्रा में लोगों के समर्थन और जोश की कई खूबसूरत तस्वीरें देखने मिली हैं। कहीं कोई बच्ची राहुल गांधी का हाथ पकड़ रही है, कहीं कोई बूढ़ी महिला उनके हाथ से पानी पी रही है, बहुत से लोग गोद में बच्चों को लिए चल रहे हैं, कई युवा राहुल गांधी के कदम से कदम मिलाने आगे बढ़ रहे हैं। जिन लोगों की जुबां पर ये सवाल रहा करता था कि देश में विपक्ष कहां है, कांग्रेस के लोग सड़कों पर क्यों नहीं दिखते, इस यात्रा से उन सारे लोगों को जवाब मिल रहे हैं। अब कांग्रेस के कई शीर्ष नेता ही नहीं, उनके साथ जनसैलाब सड़क पर आ गया है। अलग–अलग धर्मों, प्रांतों और भाषाओं के लोग राहुल गांधी के साथ यात्रा करने के लिए स्वैच्छिक तौर पर आगे आ रहे हैं। कोई महंगाई का दर्द बयां कर रहा है, कोई बेरोजगार होने की पीड़ा सुना रहा है। बहुत से लोग देश में बने नफरत के माहौल को बदलने के इरादे से इस यात्रा में भागीदारी कर रहे हैं। ये जज्बा दिखाता है कि देश की मौजूदा परिस्थितियों को आंख मूंद कर सब चंगा सी नहीं कहा जा सकता। बहुत सी ऐसी बातें हैं, जो लोगों को तकलीफ दे रही हैं और अब लोग उन पर आवाज उठाने के लिए आगे बढ़ रहे हैं। यही एक सफल नेतृत्व और राजनेता की पहचान है। राहुल गांधी फिलहाल इस पर खरे उतरते दिख रहे हैं। हालांकि इस यात्रा के शुरुआती सात दिनों में ही अलग–अलग प्रवृत्तियों के विवाद भी उभरे हैं, लेकिन इन्हें अधिक महत्व न देकर कांग्रेस को यात्रा के उद्देश्य और मंजिल पर ही ध्यान देना चाहिए।

समाज और संघवाद सबसे

हरिशंकर व्यास

समाज रचना की जातियां हो या देश की रचना का संघवाद, सबसे साथ दिल्ली सल्तनत का वोट खेला चला हुआ है। कोई माने या नहीं माने लेकिन दक्षिण भारत के राज्य अपने को काफी अलग थलग महसूस कर रहे हैं। हमेशा एक को दूसरे के खिलाफ खड़ा करने या एक को दूसरे से लड़ाने की सोच वाले लोगों की वजह से दक्षिण के राज्य खतरा महसूस कर रहे हैं। उनको लग रहा है कि हिंदी उनके ऊपर थोपी जा रही है। निश्चित ही हिंदी को महत्व मिलना चाहिए। उसे राजकाज की भाषा भी बननी चाहिए लेकिन यह सबको साथ लेकर किया जाना चाहिए। पिछले कुछ दिनों से हिंदी के प्रति प्रेम ऐसे प्रकट किया जाने लगा है, जिससे दूसरी भाषाओं के नेता खतरा महसूस कर रहे हैं। हिंदी पट्टी के वोट के लिए ऐसा किया जा रहा है। संसद में केंद्रीय मंत्री तमिल, तेलुगू, कन्नड या मलयाली नेताओं के सवालों के जवाब भी हिंदी में देते हैं। इस पर सवाल उठता है तो वे कह देते हैं कि हर सांसद की सीट के पास मशीन लगी है, जिसमें अनुवाद सुना जा सकता है। आमतौर पर अंग्रेजी बोलने वाले सांसद भी अंग्रेजी में जवाब देने का आग्रह ठुकरा कर हिंदी में जवाब देते हैं।

एक तरफ दक्षिण भारत के राज्यों को भाषा के नाम पर अलग थलग किया जा रहा है तो राजनीति में लगातार हिंदी क्षेत्रों का वर्चस्व बढने के बाद उनको अपना महत्व घटता दिख रहा है। आर्थिक असमानता अलग उनके लिए मुश्किल पैदा कर रही है। पिछले दिनों तमिलनाडु के वित्त मंत्री पलानिवेल त्यागराजन ने कहा कि केंद्र सरकार उनको कुछ नहीं दे रही है। उन्होंने कहा कि केंद्र को तमिलनाडु से एक रुपए का राजस्व मिलता है तो उसमें से 33–34 पैसे वह वापस कर रही है। पिछले दिनों दक्षिण भारत के राज्यों ने करों के बंटवारे को लेकर 15वें वित्त आयोग की सिफारिशों का विरोध किया था। उनका कहना था कि ज्यादा आबादी वाले राज्यों या कम विकसित राज्यों को ज्यादा पैसा क्यों दिया जाएगा? उनका कहना था कि दक्षिण के राज्यों ने विकास किया है या आबादी कम रखी है तो उनको इसके लिए सजा नहीं दी जा सकती है। लेकिन किसी को इन बातों की परवाह नहीं है। अभी हिंदू की बात करके, हिंदी की बात करके, हिंदी पट्टी की बात करके वोट मिल रहे हैं तो वह किया जा रहा है। लेकिन इसका अंत नतीजा बहुत भयावह हो सकता है।

राजनैतिक दलों को चन्दे का मायाजाल

इसमें सबसे ज्यादा फायदा कांग्रेस और भाजपा को हुआ है । असल में सत्तारूपी पार्टी विभिन्न व्यापारिक कम्पनियों के लिए ऐसे नियम बनाती है, जिससे उन्हें करोड़ों का फायदा होता है । इसके बदले कम्पनी उस पार्टी को चन्दे के रूप में पैसा देती है । कानूनी दृष्टि से न सही, यह एक प्रकार की दलाली या रिश्वत है । एक मामूली सिपाही 100 रुपये की वसूली के कारण नौकरी से निकाल दिया जाता है...

अजय दीक्षित

पिछले दिनों राजनैतिक दलों में शुद्धता को लेकर स्वयंसेवी संस्था एसोसिएशन फॉर डेमोक्रेटिक राइट्स (एडीआर) ने विभिन्न राजनैतिक दलों को प्राप्त चन्दे का विवरण प्रकाशित किया है । इस संस्था द्वारा जारी आँकड़ों के अनुसार सन् 2004–05 से 2020–21 तक आठ राष्ट्रीय पार्टियों ने 15,078 करोड़ रुपया पर अज्ञात स्रोतों से प्राप्त किया है । असल में बीस हजार तक चन्दे की प्राप्ति पर राजनैतिक दलों को स्रोत बताने की आवश्यकता नहीं होती । इसके अलावा एलोक्टोरल बाण्ड से प्राप्त चन्दे के स्रोत अर्थात् चन्दा दाता का नाम घोषित करना अनिवार्य नहीं है । असल में, एलोक्टोरल बाण्ड का प्रावधान मोदी सरकार ने तय किया था । इसे लोकसभा में मनी–बिल के रूप में प्रस्तुत किया गया और राज्यसभा से पारित हुए बिना बिल पर राष्ट्रपति की स्वीकृति ले ली गई । एलोक्टोरल बाण्ड असल में कोई भी बैंक से खरीद सकता है । बैंक को तो मालूम रहता है कि यह किस व्यक्ति या संस्था, या फर्म ने खरीदा है, परन्तु बाण्ड खरीदने वाला जब इसे किसी राजनीतिक दल को देता है तो वह अज्ञात होता है, उसे अपना नाम, पता, अपना पैन नम्बर आदि देने की आवश्यकता नहीं होती । असल में इस एलोक्टोरल बाण्ड वाला प्रावधान सुप्रीम कोर्ट में वैधता को लेकर विचाराधीन है, परन्तु अभी कई साल बीत जाने पर भी इस पर सुनवाई नहीं हुई है । एसोसिएशन फॉर डेमोक्रेटिक

रिफॉर्म राइट्स (एडीआर) एक गैर सरकारी स्वैच्छिक संस्था है जो देश में चुनाव व चुनाव प्रक्रिया में शुद्धता और शुचिता को लेकर कार्यरत है । इसकी एक रिपोर्ट के अनुसार सन् 2005 से लेकर सन् 2021 तक दो राष्ट्रीय पार्टियों – कांग्रेस और एन.सी.पी. ने 4,262 करोड़ रुपये चन्दे के रूप में कूपन बेचकर प्राप्त किये । कूपन खरीदने वाले का कोई अता–पता नहीं पूछा जाता । अतरू इन से पार्टियों को मात्र कूपन बेचकर जो 4262 करोड़ रुपया मिला उसके स्रोत का कोई अता–पता चुनाव आयोग या इनकम टैक्स डिपार्टमेंट को नहीं है । इसी संस्था की रिपोर्ट में बतलाया गया है कि पिछले सत्रह साल में आठ राष्ट्रीय पार्टियों – बी.जे.पी., कांग्रेस, एन.सी.पी., तृणमूल, सी.पी.एम., सी.पी.आई., बी.एस.पी. और नेशनल पार्टी ऑफ मेघालय को अज्ञात स्रोतों से कुल मिलाकर 15 हजार करोड़ रुपया चन्दा के रूप में मिला है । इसमें सबसे ज्यादा फायदा कांग्रेस और भाजपा को हुआ है । असल में सत्तारूपी पार्टी विभिन्न व्यापारिक कम्पनियों के लिए ऐसे नियम बनाती है, जिससे उन्हें करोड़ों का फायदा होता है । इसके बदले कम्पनी उस पार्टी को चन्दे के रूप में पैसा देती है । कानूनी दृष्टि से न सही, यह एक प्रकार की दलाली या रिश्वत है । एक मामूली सिपाही 100 रुपये की वसूली के कारण नौकरी से निकाल दिया जाता है, पर अपने को खद्दर पहनकर गांधी का अनुयायी कहने वाले इस प्रकार की रिश्वतखोरी को बढ़ावा देते हैं फिर वे चाहे किसी भी पार्टी के क्यों न हों । असल में जब सांसदों या विधायकों की वेतन बढ़ाने का मसला आता है, या फिर भत्ते बढ़ाने की बात होती है तब पक्ष और विपक्ष एक हो जाता है और एक दूसरे की गलवाही करके अपने पक्ष में वेतन बढ़ा लेते हैं यानि अब देश सेवा भी सरकारी नौकरी हो गई है । इसी से सभी राजनेता अपने बेटा–बेटी को राजनीति में उतार रहे हैं क्योंकि आज भारत में यह पैसा, रुतबा, रौब और सम्मान की दृष्टि से नेतागिरी सबसे ज्यादा लाभदायक व्यवसाय है । आखिर शुद्ध ईमानदारी से कैसे मंत्रियों की सालाना बचत करोड़ों रुपये हो जाती है जो उनके स्वयं के घोषणा–पत्र से ज्ञात होती है । सन् 2020–21 में एलोक्टोरल बाण्ड का 77त्न (यानि 250 करोड़) 27 क्षेत्रीय पार्टियों को मिला जिसमें शिवसेना, की.आर.एस., वाई.एस.आर. कांग्रेस, आम आदमी पार्टी, बीजू जनता दल, डी.एम.के., जनता दल (सैकूलर), जनता दल (यूनाइटेड), असमगण परिषद, ऑल इण्डिया अन्ना डी.एम.के., ऑल इण्डिया फॉरवर्ड ब्लॉक, ऑल इण्डिया मुस्लिम मजलिस, झारखण्ड मुक्ति मोर्चा, महाराष्ट्र नवनिर्माण सेना, ऑल इण्डिया यू.डी.एफ. आदि शामिल है । असल में राजनैतिक दल अभी भी सूचना के अधिकार कानून के अन्तर्गत नहीं आते । अतरू उनकी जनता के प्रति कोई जवाबदेही नहीं है जबकि राजनीति में हर कदम पर जनता को पूरा सच जानने का अधिकार है । असल में हमाम में सभी राजनैतिक दल निर्वस्त्र हैं ।

कर्तव्य पथ पर किसको चलना है?

लेकिन देश में समानों के लिए समान कानून की व्यवस्था चलती है और बोलने पर पाबंदी नहीं तो पहरा जरूर लगा हुआ है। लोग भूख से मर रहे हैं, पीने का साफ पानी लोगों को नसीब नहीं है, कहीं बाढ़ में डूब कर लोग मर रहे हैं तो कहीं बारिश और वज्रपात से मर रहे हैं, कहीं लू और ठंड से लोग मरते हैं तो कहीं महामारी में ऑक्सीजन, दवा और इलाज की कमी से मर जाते हैं। सबके लिए अच्छी व सस्ती ...

अजीत द्विवेदी

रायसीना की पहाडियों पर बने राष्ट्रपति भवन से इंडिया गेट तक जाने वाली सड़क का नाम राजपथ से बदल कर कर्तव्य पथ कर दिया गया है। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने अपनी सरकार के बेहद विवादित सेंट्रल विस्टा परियोजना के पहले चरण के पूरा होने के मौके पर इसका उद्घाटन किया। राजपथ का नाम पहले किंग्सवे था यानी राजा का रास्ता। देश की आजादी के बाद इसका नाम बदला गया। चूंकि इस सड़क के दोनों तरफ भारत सरकार के कार्यालय स्थित हैं, जहां से राज्य का काम चलता है, इसलिए इसका नाम राजपथ रखा गया। अब इसका नाम कर्तव्य पथ कर दिया गया है। नाम बदल जाने से क्या बदलेगा, इसका अंदाजा अभी नहीं लगाया जा सकता है। आखिर रेसकोर्स रोड का नाम बदल कर लोक कल्याण मार्ग कर देने से भला लोक का कौन सा कल्याण हुआ है? उस सड़क पर प्रधानमंत्री का आवास है लेकिन जब सेंट्रल विस्टा परियोजना के तहत पीएम एन्क्लेव का काम पूरा हो जाएगा तो लोक कल्याण मार्ग से पीएम आवास हट जाएगा।

बहरहाल, नाम बदलना इस सरकार का शगल रहा है। लुटियन की दिल्ली में ही कितनी सड़कों के नाम बदले गए हैं। रेसकोर्स रोड का नाम लोक कल्याण मार्ग हो गया। औरंगजेब रोड का नाम एपीजे अब्दुल कलाम रोड हो गया। राष्ट्रपति भवन के साथ वाली सड़क डलहौजी रोड का नाम बदल कर औरंगजेब के भाई दारा शिकोह के नाम पर किया गया। अब राजपथ का नाम कर्तव्य पथ हो गया। यह सब पिछले पांच साल में हुआ है। लुटियन की दिल्ली के बाहर देश भर में शहरों, गलियों, सड़कों, रेलवे स्टेशनों आदि के नाम बदले गए हैं। लेकिन राजपथ का नाम बदलने का मामला बाकी बदलावों से बहुत अलग है। यह मुगल शासक या किसी अंग्रेज आतातायी के नाम पर बनी सड़क नहीं है या घोड़ों पर रेस लगाने का भाव इसमें नहीं है। यह राजकाज को प्रतीकित करने वाली सड़क है। फिर भी इसे कर्तव्य के साथ जोड़ा गया है तो इसका मकसद कुछ और है। ध्यान रहे जब भी सरकारें अपनी जिम्मेदारी निभाने में सफल नहीं होती हैं तो जनता से सवाल करती हैं कि उसने देश के लिए क्या किया है। इन दिनों भी बार बार सोशल मीडिया में लोगों को सलाह दी जाती है कि वे यह न पूछें कि देश ने उनके लिए क्या किया है, बल्कि यह सोचें कि उन्होंने देश के लिए क्या किया है। यह बड़ी होशियारी से सरकार को उसकी जिम्मेदारियों से मुक्त करने का प्रयास लगता है। इसके जरिए लोगों को समझाया जाता है कि देश बहुत विशाल है, इसकी आबादी बहुत ज्यादा है और पिछले 70 साल में कुछ नहीं हुआ है इसलिए सरकार को सब कुछ ठीक करने में समय लगेगा। तब तक लोग इंतजार करें। इस बीच वे अपने कर्तव्य निभाएं और देश के विकास में योगदान करें। सरकार उनको रोजगार नहीं दे पा रही है या ज्यादा टैक्स लगा कर उनसे पैसे वसूल रही है तो वे इसे देशहित का काम समझ कर चुप रहें। ज्यादा टैक्स भर कर वे बुनियादी रूप से अपना कर्तव्य निभा रहे हैं। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने इस साल लाल किले से अपने भाषण में श्पांच प्राण्य का जिक्र किया। उन्होंने कहा कि इनसे देश अगले 25 साल में विकसित देश बनेगा। उनका पांचवां प्राण कर्तव्य का है। उन्होंने देश के लोगों से अपने कर्तव्यों के पालन करने की अपील की। जब आप संविधान में कर्तव्यों से जुड़े अनुच्छेदों का इतिहास जानेंगे तो अपने आप समझ आ जाएगा कि प्रधानमंत्री मोदी की अपील का क्या मतलब है। नागरिक कर्तव्यों का जिक्र मूल संविधान में नहीं था। संविधान सभा ने लंबी बहस के बाद जिस संविधान का निर्माण किया था और जिसे देश ने अंगीकार किया था, उसमें कर्तव्यों का अनुच्छेद नहीं था। उसमें अधिकारों और राज्य के नीति निर्देशक तत्वों से जुड़े अनुच्छेद थे। संविधान के तीसरे परिच्छेद में अनुच्छेद 12 से 35 तक मौलिक अधिकारों का जिक्र है। उस समय संविधान सभा ने नागरिकों के कर्तव्य तय करने की जरूरत नहीं समझी थी। कर्तव्यों का अनुच्छेद 1976 में उस समय जोड़ा गया, जब देश में इमरजेंसी लगी थी। आपातकाल के समय इंदिरा गांधी की सरकार ने स्वर्ण सिंह कमेटी की सिफारिशों पर संविधान के 42वें संशोधन के जरिए मौलिक कर्तव्यों को जोड़ा। संविधान के पार्ट चार–ए में इसे रखा गया है। पहले नागरिकों के 10 कर्तव्य बताए गए थे लेकिन 2002 में अटल बिहारी वाजपेयी की सरकार ने एक और कर्तव्य इसमें जोड़ दिया। प्रधानमंत्री ने या सरकार ने राजपथ का नाम कर्तव्य पथ करने के पीछे की दार्शनिक सोच के बारे में नहीं बताया है। हो सकता है कि लोगों को बताया जाए कि कर्तव्य पथ के जरिए सरकार चला रहे लोगों को संदेश दिया गया है कि वे अपने कर्तव्यों के प्रति जागरूक रहें। यह ट्विस्ट आ सकता है। लेकिन असल में इसका मकसद कुछ और है। पिछले कई सालों से लोगों को समझाया जा रहा है कि वे अपने कर्तव्यों का निर्वहन करें। उनके अधिकारों से ज्यादा जोर कर्तव्यों पर दिया जा रहा है। जैसे शहरों, कस्बों और गांवों को स्वच्छ रखने की बुनियादी व्यवस्था बनाए बगैर नागरिकों पर स्वच्छता की जिम्मेदारी डाल दी गई। लेकिन नागरिकों से कर्तव्यों के सम्यक निर्वहन की अपेक्षा तभी की जा सकती है, जब उनके सारे मौलिक अधिकार सुनिश्चित किए जाएं। यह अलग बात है कि नागरिक खुद ही ज्यादातर कर्तव्यों का निर्वहन करते हैं और अगर नहीं करते हैं तो उनका पालन कराने के लिए कानून है। भारत में नागरिक कर्तव्य ऐसे हैं, जिनका पालन नहीं करने पर जेल हो सकती है। जैसे राष्ट्रीय प्रतीकों का सम्मान करना पहला कर्तव्य है। अगर नागरिक ऐसा नहीं करते हैं तो उनको जेल भेजने का कानून है। इसी तरह एक कर्तव्य देश की एकता, अखंडता और संप्रभुता को बनाए रखने का है। इसका भी पालन नहीं करने पर जेल भेजने का कानून है। पर्यावरण की रक्षा करना भी मौलिक कर्तव्य है और इसे भी पूरा नहीं करने पर जेल जाने का प्रावधान है। सरकारी संपत्ति की रक्षा करना भी मौलिक कर्तव्य है और इसमें भी विफल रहने पर जेल भेजा जा सकता है। आपसी सद्भाव बनाए रखना भी कर्तव्य है और इसके उल्लंघन पर भी जेल भेजने का कानून है। वाजपेयी सरकार ने 2002 में यह कर्तव्य जोड़ा कि हर माता–पिता का अपने छह से 14 साल के बच्चे को स्कूल भेजना उसका कर्तव्य है। लेकिन देश में 14 साल से कम उम्र के डेढ़ करोड़ के करीब बच्चे स्कूल जाने की बजाय काम करते हैं। यह दंडनीय अपराध है। सोचें, कर्तव्यों का निर्वहन नहीं करने पर जेल भेजने के कानून हैं। लेकिन अधिकार नहीं मिले तो नागरिक कुछ नहीं कर सकता है। उसके लिए सरकारों की जिम्मेदारी तय नहीं हो सकती है। संविधान नागरिकों को सम्मान से जीने का अधिकार देता है। लेकिन करोड़ों लोग पशुओं जैसी बदतर जिंदगी बीता रहे हैं। लेकिन इसके लिए किसी सरकार की जिम्मेदारी नहीं बनती है। संविधान कानून के समक्ष सबकी समानता की बात करता है और सबको बोलने व अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता देता है।

ब्रिटेन क्या है लोकतंत्र है या राजतंत्र सेकुलर है

नई दिल्ली। ब्रिटेन क्या है लोकतंत्र है या राजतंत्र सेकुलर है या ईसाई देश गोरों का घर या सभी नस्लों का घरौंदा वह महाशक्ति या क्षेत्रीय शक्ति शोषक देश या सभ्य देश पूंजीवादी या जनकल्याणकारी राष्ट्रवादी देश या वैश्विक देश दुनिया की वित्तीय राजधानी या बौद्धिक राजधानी दिखावों का देश या रियलिटी को जीता हुआ देशऽऐसे असंख्य सवाल महारानी एलिजाबेथ की मृत्यु और महाराज चार्ल्स तृतीय के राज्याभिषेक की तस्वीरों से उभरते हैं। सोचें, इक्कीसवीं सदी में राजशाही का एक दरबार और ईसाई धार्मिक अनुष्ठानों के साथ नए राजा का राज्याभिषेक। ऊपर से राजा, रानी, प्रिंस, प्रिंसेस और प्रजा की भावविह्वल श्रद्धांजलि तो नए राजा का जयकारा भी! दुनिया के सभी देश, फिर भले वह ईसाई हो या इस्लामी या हिंदू या सेकुलर या यहूदी या रूस और चीन सभी ने महारानी को श्रद्धांजलि दी है। अधिकांश देशों के झंडे भी झुके। मानों पौने सात करोड़ लोगों के ब्रिटेन की आत्मा राजशाही हो। सबसे बड़ी बात जो अनुदारवादी ब्रितानी हो या उदारवादी, सभी इस भाव में गमगीन थे कि परिवार ने मातृसत्ता खो दी। मगर कोई बात नहीं लांग लिव किंग! लंदन की श्द इकॉनोमिस्ट्य पत्रिका हो या प्रगतिशील–उदार अखबार श्द गार्जियन्य सभी दिवंगत महारानी और नए महाराज के विमर्श में खोए हुए!

इसलिए ब्रिटेन का अर्थ गहरा है। ब्रिटेन एक कहानी है। वह कहानी, जिसकी निरंतरता, जिसका अच्छापन वक्त के साथ बढ़ता हुआ है, खिलता हुआ है। पृथ्वी पर इंसान की मानवीय याकि रामराज वाली कहानियों के कथानक यों तो स्कैंडिनेवियाई देशों स्वीडन, नार्वे, डेनमार्क या हिंद–प्रशांत क्षेत्र के न्यूजीलैंड जैसे देशों में भी है। मगर ब्रिटेन की कहानी कई कारणों से बेमिसाल है। ब्रिटेन का घर दुनिया की हर नस्ल, हर धर्म, हर रंग, हर मिजाज का घरौंदा है। मैं मनुष्य और उसकी गरिमा और मानव आजादी में फ्रांस को अनुकरणीय मानता हूं। लेकिन फ्रांस में अभी भी गोरों का दिल–दिमाग उतना परिष्कृत और संस्कारित नहीं हुआ है जो इक्कीसवीं सदी की जरूरत है। वहां अभी भी दक्षिणपंथी–घोर राष्ट्रवादी राजनीति है। बीसवीं और इक्कीसवीं सदी के इतिहास अनुभव में फ्रांस, जर्मनी, इटली, अमेरिका, ऑस्ट्रेलिया, जापान आदि ने लोकतंत्र में अपने नागरिकों को हर तरह आजाद, सशक्त बना कर उन्हें समान अवसर और खुशहाल जीवन दिया है। लेकिन इसके बावजूद ये देश रंग, नस्ल, राष्ट्रवादी बाड़ेबंदी से देश और नागरिकों को बाहर नहीं निकाल सके। इसी केटेगरी में स्कैंडिनेविया के रामराज्य देशों को मानना चाहिए। इन देशों ने भी अपनी सीमाओं में बाहरी लोगों कों नहीं आने दिया। प्रवासियों के लिए वह उदारता नहीं बनी, जो ब्रिटेन में सहज भाव दशकों से बनती हुई है।

मैं महारानी एलिजाबेथ के सत्तर साला राज की पहचान और उसकी उपलब्धि यह समझता हूं कि उनके वक्त में ब्रिटेन दुनिया की कहानी बना। ब्रिटेन में किसी ने इस बात की पड़ताल नहीं की है और इसलिए आंकड़ा नहीं है लेकिन यदि कोई खोजे तो सात दशकों का सबसे बड़ा तथ्य ब्रिटेन का वैश्विक मानवता का सेंटर बनना है। लंदन का वैश्विक सरोकारों का, आदर्श–सुकूनदायी वैश्विक जीवन का मानदंड बनना है। इसलिए महारानी के वक्त में ब्रिटेन बदला। दुनिया के तमाम इलाकों से, तमाम तरह के लोग ब्रिटेन में आकर बसे। लंदन, स्कॉटलैंड, पूरे ब्रिटेन में बाहरी लोगों को सूकून मिलता है। और यही बात नया ब्रिटेन बनाने, उसे मानवता की धरोहर बनाने की राष्ट्रशक्ति है। महारानी एलिजाबेथ के ही वक्त में अफ्रीका से हिंदू मूल के ऋषि सुनक का परिवार ब्रिटेन आ कर बसा। वहां भारत और पाकिस्तान मूल के असंख्य हिंदू और मुसलमान जा कर बसे।

उन सबका गजब योगदान! ऋषि सुनक हाल में प्रधानमंत्री बनने की कगार पर थे। मगर मौका लिज ट्रस को सरकार बनाने का मिला तो उसमें भी प्रवासी मूल के कई मंत्री चेहरे! सत्य–तथ्य है कि कंजरवेटिव पार्टी में लिज ट्रस बनाम ऋषि सुनक में नेता पद का कंपीटिशन हुआ तो किसी भी पार्टी नेता या कार्यकर्ता के मुंह से ऐसा एक भी शब्द, जुमला, भाव नहीं निकला कि ऐ इंडियन, ऐ हिंदू तुमने हाथ में लच्छा बांधा हुआ है इंडिया जा कर राजनीति कर!

मुझे इस प्रसंग में भारत की मौजूदा संस्कारहीन, चरित्रहीन हिंदू राजनीति की बात नहीं करनी चाहिएज् लेकिन दिमाग लिखते हुए अपने परिवेश का ध्यान बना डालता है। इसलिए लिख रहा हूं, याद करा रहा हूं कि ठिक विपरित नरेंद्र मोदी और अमित शाह व उनके भक्त भाजपा नेता क्या करते हैं राहुल गांधी के टी शर्ट से लेकर उसे पप्पू, बाबा कहने जैसी टुच्ची बातें करके ये दुनिया में हमें, हमारी हिंदू राजनीति का टुच्चा चरित्र दिखला रहे हैं।

बहरहाल, गोरे ब्रितानियों ने महारानी के सत्तर सालों में अपने चरित्र, अपने संस्कारों को निखारा। मेरा मानना था, है और इसे लिख भी चुका हूं कि इस्लामी–मुगल राज के बाद अंग्रेजों का शासन हम हिंदुओं के लिए हवा का ताजा झोंका था। बतौर मालिक उन्होंने भारत को चाहे जितना लूटा हो लेकिन उनसे सैकड़ों सालों की गर्दिश में दबी हिंदू सभ्यता–संस्कृति का उत्खनन हुआ। अंग्रेज–यूरोपीय विद्वानों ने वेद, उपनिषद्, पुराण, इतिहास, समाज, संस्कृति से लेकर संस्कृत सबसे गर्द हटवाई। हिंदू स्मृतियों, संहिताओं पर सिविल नियम–कायदे बने। हिंदुओं में राजनीति, विचार, विचारधाराओं और आधुनिकता की चेतना के बुलबुले उठे। समाज–सुधार हुआ। कला–संस्कृति–साहित्य–संगीत की शास्त्रीयता उभरी, उनका विस्तार हुआ। अंग्रेज हवा में भारत के आधुनिक अद्भुत मनीषी पैदा हुए। राजा रामोहन राय, महर्षि दयानंद सरस्वती, रामकृष्ण परमंहस, विवेकानंद, टैगोर, लाल–बाल–पाल–तिलक, महर्षि रमण, अरविंद और रामतीर्थ आदि से अध्यात्म–धर्म, स्वाधीनता की चेतना पैदा हुए। गुलाम–मुर्दादिल हिंदुओं में क्रांतिकारी, आंदोलनजीवी, निर्भय–निडर लोग पैदा हुए। आधुनिकता, ज्ञान–विज्ञान के झोंके बने। वह गजब ही काल था जो 1850 से 1950 के बीच भारतीयों में एक–के बाद एक ऐसे चेहरे पैदा हुए, जिनकी मानो रिले रेस दुनिया में हिंदू बुद्धि–संस्कृति–सभ्यता का झंडा गाढने का संकल्प लिए हुए थी। इस सत्य–तथ्य को नोट रखें कि तब हिंदुओं में एक होने, जात तोडने का, मुसलमान का भी नेतृत्व करने का समाज व राष्ट्र चिंतन हुआ था। सामूहिक लीडरशीप के विकास के साथ ह्यूमनिस्ट, कम्युनिस्ट, समाजवादी, हिंदुवादी, पूंजीवादी जैसे आइडिया के विकल्पों की भारत में नर्सरियां बनीं थी! वह हिंदू पुनरूत्थान का स्वर्णकाल था।

हां, भारत को, दक्षिण एशिया को अंग्रेज गोरों से वह सब प्राप्त हुआ जो बाकी महाद्वीपों को उपनिवेशवाद में प्राप्त हुआ था। मगर यह उपमहाद्वीप का दुर्भाग्य, इसके बारह सौ साला इतिहास से बनी नियति जो गोरों ने ज्योंहि हमें आजादी दी हम एकल लीडरशीप, हिंदू–मुस्लिम ग्रंथि तथा भय–भूख के कलियुगी जीवन चरित्र में फिर लौट गए। उधार के टेंपलेटों, सत्ता की गुलामी और गोबर के संस्कारों में न केवल 75 वर्ष गंवा दिए, बल्कि भविष्य को गंवार–भक्त हिंदू राजनीति का गिरवी भी बना डाला। फालतू की बात है कि 75 वर्षों में ब्रिटेन का सूर्य अस्त हुआ। ब्रिटेन पहले भी दुनिया के समय का, दुनिया की घड़ी का निर्धारक था और आज भी है। उसकी विश्वगुरूता फर्जी नहीं है। दुनिया के इंसानी, मानवी जीवन को जीने की चाहना वाले हर समझदार मानव के लिए ब्रिटेन सपना है। कामना है। ब्रिटेन के ऑक्सफोर्ड–कैंब्रिज आज भी शिक्षा–ज्ञान–विज्ञान–रिसर्च के प्रतिमान हैं। आज भी वह शेक्सपियर का वैश्विक थियेटर है। लंदन का वेस्टएंड और उसके नाटक न्यूयॉर्क के वेस्टएंड से जलवे में बीस हैं उन्नीस नहीं। पेरिस को छोड़ें तो लंदन दुनिया की पर्यटक राजधानी है। सैर–सपाटे की मनभावक–सुकून वाली मंजिल है। रंगमंच, साहित्य, संगीत, संग्रहालयों, पुस्तकालयों, कलादीर्घाओं और वित्त तथा व्यापार की विश्व राजधानी है। इस्लामी देशों के अरब लोग हों या अफ्रीका का अश्वेत एलिट या रूसी और चाइनीज सबका मनभावक ठिकाना है लंदन। सबकी पनाहगाह है ब्रिटेन।

भला क्यों इसलिए कि ब्रिटेन जिंदादिल, संस्कारी गोरों का चरित्र है। इस चरित्र कथा में महारानी है महाराज है, बावजूद इसके राजपरिवार टैक्स देता है। किंग–क्वीन मुखिया है मगर न डफर, न प्रतीक और न सत्ता केंद्र। प्रधानमंत्री महारानी और महाराज को रिपोर्ट करेगा मगर वे उसे आदेश तो दूर सलाह भी नहीं देंगे। महारानी के लिए ट्रैफिक नहीं रूकता तो प्रधानमंत्री के लिए भी नहीं। वहां महाराज और प्रधानमंत्री कथित छप्पन इंची छाती का नहीं होता। फिर भी रियल सुपरपॉवर है। वहां का मीडिया महारानी या प्रधानमंत्री की गोदी में बैठा नहीं होता। महारानी, प्रधानमंत्री और मंत्री, प्रदेश मुख्यमंत्री वहां अपने नित नए महल नहीं बनाते। सदियों पुराना महारानी महल, संसद भवन और लंदन का दिल्ली के सेंट्रल विस्टा जैसा इलाका आज भी घास–फूस और बजरी के फुटपाथ की ओरिजिन शान है। गर्व है। महारानी और महाराज अपनी निश्चित आय पर जीते हैं तो टैक्स भी अदा करते हैं।

क्या यह सब कहानी नहीं है क्या यह कहानी नहीं जो स्कॉटलैंड यार्ड पुलिस, संसदीय समिति अपने विवेक से अपने प्रधानमंत्री के आचरण, लॉकडाउन के बावजूद उसके घर पर पार्टी होने की चर्चा की जांच करे और प्रधानमंत्री को दोषी पाए तो वह प्रधानमंत्री पार्टी, संसद और जनता के नैतिक दबाव में इस्तीफा दे! यह सच्चाई भी जानें कि दुनिया के तमाम असंस्कारी, चरित्रहीन देशों से पहुंचे नागरिक ब्रिटेन में जा कर संस्कारी बन जाते हैं! क्यों और कैसे इसलिए कि शीर्ष का टॉप याकि राजा–रानी और प्रधानमंत्री और सत्ता सब भद्रता में जीते हैं। वे गालियां नहीं देते। वे देश की जनता को नहीं बांटते। वे नागरिकों का चरित्र बनाते है। सत्ता और पार्टियां ट्रोल पैदा करने वाले लंगूर पैजा नहीं करती। वे डिबेट करते है, संसद लगातार चलती है तो राजनीति वहां सीबीआई– ईडी की लाठियों तथां खरीदफरोख्त की मंडी नहीं है। वहा नेता जनता को इवेंट मैनेजमेंट से उल्लू नहीं बनाते। उन पर राशन–नमक दे कर अहसान नहीं जताते। जाहिर है ब्रिटेन के समाज और उसके जनजीवन का पोर–पोर अंग्रेज लोगों, नागरिकों की सहजता, भद्रता, समानता, जिंदादिली व काबलियत की अंतरधारा में ध ड़कता है।

हां, सत्य है कि अंग्रेज, मुसलमान, अफ्रीकी, हिंदू, चाइनीज कोई भी हो, ब्रिटेन की सड़कों पर दिन में या आधी रात में सुनसान सड़क या खाली मेट्रो में बेखौफ सफर करता है। न पुलिस का डर और न हिंसा–छीना–झपटी का वैसा खतरा जैसा अमेरिका में भी लोगों को होता है या दुनिया के तमाम देशों में होता है।

और सबसे बड़ी बात! सोचे, ब्रिटेन है बिना लिखित संविधान के! सिर्फ और सिर्फ परंपरा और उससे बनी व्यवस्थाओं, संस्कारों और चरित्र से है!

इसलिए कहानी है ब्रिटेन! महारानी एलिजाबेथ के सत्तर सालों में ब्रिटेन के गोरों का भलापन बढ़ा। चाय–बिस्कुट की उनकी इवनिंग टी की रौनक बढ़ी। मौसम के मिजाज में जीवन के सुख लेना बढ़ा। समाज के अलग–अलग वर्गों की तासीर में सभी जनों का अपने–अपने काम में खोए रहना बढ़ा। ब्रिटेन की कहानी में वे कोई विलेन नहीं है जो तेरा–मेरा, मैं दलित तू फॉरवर्ड, मैं देशभक्त तू देशद्रोही, मैं ईसाई तू हिंदू या मुसलमान जैसा रागद्वेष बनवाता हुआ हो।

इसलिए ब्रिटेन पर सोचें तो सिर्फ यह सोचें कि ब्रिटेन जैसी कहानी क्या पूरी मानव सभ्यता की भी कभी बन सकती है

लोकप्रिय पर्यटक स्थलों में भारतीय ही नहीं बल्कि विदेशी पर्यटक भी अध्यात्म और शांति की चाह के लिए आते हैं ऋषिकेश

ऋषिकेश का अपना धार्मिक महत्व तो है ही लेकिन दिल्ली–एनसीआर के लोगों के बीच यह वीकेंड पर्यटन स्थल के रूप में भी काफी लोकप्रिय है। हिंदू तीर्थस्थल ऋषिकेश को हिमालय का प्रवेश द्वार भी माना जाता है। ऋषिकेश का शांत और सुरम्य वातावरण सभी को अपनी ओर आकर्षित करता है। भारत के पवित्र स्थलों में से एक ऋषिकेश में कई साध ु–संतों का आश्रम भी है।

ऋषिकेश की सुंदरता बढ़ाने के लिए हिमालय की निचली पहाड़ियां और कल–कल बहती गंगा नदी भी अपना योगदान देती हैं। ऋषिकेश को चारधाम यानि केदारनाथ, बद्रीनाथ, गंगोत्री और यमुनोत्री का प्रवेशद्वार माना जाता है। यहां सिर्फ भारतीय ही नहीं बल्कि विदेशी लोग भी अध यात्म और शांति की चाह में आते हैं और मोक्ष के लिए ध्यान लगाते हैं। ऋषिकेश के लोकप्रिय स्थलों की बात करें तो उसमें सबसे पहले लक्ष्मण झूला का नाम आता है। कहा जाता है कि गंगा नदी को पार करने के लिए लक्ष्मणजी ने इस स्थान पर जूट का झूला बनवाया था। झूले के बीच में पहुँचने पर वह हिलता हुआ प्रतीत होता है। 450 फीट लम्बे इस झूले के समीप ही लक्ष्मण और रघुनाथ मन्दिर हैं। झूले पर खड़े होकर आसपास के खूबसूरत नजारों का आनन्द लिया जा सकता है। लक्ष्मण झूला के समान राम झूला भी नजदीक ही स्थित है।

त्रिवेणी घाट को ऋषिकेश में स्नान करने का प्रमुख घाट माना जाता है। इस घाट का नाम त्रिवेणी इसलिए है क्योंकि यहां तीन प्रमुख नदियों– गंगा, यमुना और सरस्वती का संगम होता है। हर रोज शाम को त्रिवेणी घाट पर होने वाली गंगा आरती देखना मन को शांति प्रदान करता है और आरती की भव्यता भी देखने लायक होती है।

नीलकण्ठ महादेव मंदिर सभी को अवश्य जाना चाहिए। मान्यता है कि भगवान शिव ने इसी स्थान पर समुद्र मन्थन से निकला विष ग्रहण किया गया था। मन्दिर परिसर में पानी का एक प्रसिद्ध झरना है जहाँ भक्तगण मन्दिर के दर्शन करने से पहले स्नान करते हैं।

ऋषिकेश के सबसे प्राचीन मंदिर की बात करें तो वह है भरत मंदिर। इस मंदिर को 12वीं शताब्दी में आदि गुरु शंकराचार्य जी ने बनवाया था।

मंदिर को 1398 में तैमूर ने आक्रमण के दौरान क्षतिग्रस्त कर दिया था लेकिन आज भी मंदिर की बहुत–सी महत्वपूर्ण चीजें सुरक्षित रखी गयी हैं। मंदिर के अन्दरूनी गर्भगृह में भगवान विष्णु की प्रतिमा एकल शालीग्राम पत्थर पर उकेरी गई है। आदि गुरु शंकराचार्य द्वारा रखा गया श्रीयन्त्र भी यहाँ स्थापित है।

ऋषिकेश आये हैं तो वशिष्ठ गुफा देखने जरूर जायें। लगभग 3000 साल पुरानी वशिष्ठ गुफा बद्रीनाथ–केदारनाथ मार्ग पर स्थित है। जब आप इस मार्ग पर आएंगे तो पाएंगे कि बहुत से साधु–संत ध्यान लगाये बैठे हैं। गुफा के भीतर एक शिवलिंग भी स्थापित है, जिसके पूजन के लिए लोग दूर–दूर से आते हैं।

ऋषिकेश में लोग रीवर राफ्टिंग करने के लिए भी आते हैं और गंगा किनारे टैंटों में रात गुजारने का भी लोग मजा लेते हैं। हालांकि मानसून या वर्षा के मौसम में यह सुविधा उपलब्ध नहीं हो पाती है। ऋषिकेश में घूमने के लिए बस, टैक्सी अथवा परिवहन के अन्य साधन आसानी से उपलब्ध हो जाते हैं और यहां खाने–पीने की भी सभी चीजें आसानी से मिल जाती हैं। तो फिर देर किस बात की...यदि दिल्ली और उसके आसपास रहते हैं तो पहुँच जाइये वीकेंड पर।

से एक स्टैच्यू ऑफ यूनिटी

स्टैच्यू ऑफ यूनिटी इस्पात साँचे, प्रबलित कंक्रीट तथा कांस्य लेपन से युक्त है। इस स्मारक

की विशेषताओं की बात करें तो स्मारक तक पहुँचने के लिये लिफ्ट है। इसके अलावा छत पर स्मारक उपवन, विशाल संग्रहालय तथा प्रदर्शनी हॉल है जिसमें सरदार पटेल की जीवन तथा योगदानों को दर्शाया गया है।

गुजरात में वैसे तो पर्यटन के बहुत से केंद्र हैं लेकिन भारत के पहले उपप्रधानमंत्री और पहले गृहमंत्री रहे सरदार वल्लभभाई पटेल को समर्पित स्टैच्यू ऑफ यूनिटी सबसे लोकप्रिय पर्यटक स्थलों में से एक हो गया है। यह स्टैच्यू केवड़िया क्षेत्र में स्थित है। यहां इस मूर्ति की स्थापना से पूरे केवड़िया का भाग्योदय हो गया है क्योंकि यहां इतनी बड़ी संख्या में देशी–विदेशी पर्यटक आते हैं कि आसपास के लोगों को जीवनयापन के लिए बहुत बड़ा सहारा मिल गया है। उल्लेखनीय है कि सरदार पटेल का यह स्मारक सरदार सरोवर बांध से लगभग साढ़े तीन किलोमीटर की दूरी पर साधू बेट नामक स्थान पर है। यह विश्व की सबसे ऊँची मूर्ति भी है जिसकी लम्बाई 182 मीटर है। इसके बाद विश्व की दूसरी सबसे ऊँची मूर्ति चीन में स्प्रिंग टैम्पल बुद्ध है, जिसकी आधार के साथ कुल ऊंचाई 153 मीटर बताई जाती है। गुजरात के मुख्यमंत्री के रूप में नरेंद्र मोदी ने इस स्मारक की परिकल्पना की थी और 31 अक्टूबर 2013 को सरदार पटेल के जन्मदिवस के अवसर पर इस विशालकाय मूर्ति के निर्माण का शिलान्यास किया था।

इसके बाद प्रधानमंत्री के रूप में नरेंद्र मोदी ने इसका उद्घाटन 31 अक्टूबर 2018 को किया था। हालांकि तत्कालीन गुजरात सरकार ने इस परियोजना की घोषणा 7 अक्टूबर 2010 को की थी। इस मूर्ति को बनाने के लिये लोहा पूरे भारत के गाँव में रहने वाले किसानों से खेती के काम में आने वाले पुराने और बेकार हो चुके औजारों का संग्रह करके जुटाया गया। इस अभियान का नाम ष्स्टैच्यू ऑफ यूनिटी अभियानष दिया गया था। बताया जाता है कि 3 माह तक चले इस अभियान में लगभग 6 लाख ग्रामीणों ने मूर्ति की स्थापना हेतु लोहा दान किया था। इस दौरान लगभग 5,000 मीट्रिक टन लोहे का संग्रह किया गया। यही नहीं, सरदार पटेल की मूर्ति निर्माण के अभियान से ष्सुराजष प्रार्थना–पत्र भी बनाया गया था जिसमें जनता बेहतर शासन पर अपनी राय लिख सकती थी। सुराज प्रार्थना पत्र पर 2 करोड़ लोगों ने अपने हस्ताक्षर किये, जोकि विश्व का ऐसा सबसे बड़ा प्रार्थना–पत्र बन गया जिस पर हस्ताक्षर हुए हों। स्टैच्यू ऑफ यूनिटी इस्पात साँचे, प्रबलित कंक्रीट तथा कांस्य लेपन से युक्त है। इस स्मारक की विशेषताओं की बात करें तो स्मारक तक पहुँचने के लिये लिफ्ट है। इसके अलावा छत पर स्मारक उपवन, विशाल संग्रहालय तथा प्रदर्शनी हॉल है जिसमें सरदार पटेल की जीवन तथा योगदानों को दर्शाया गया है। साथ ही एक नदी से 500 फुट ऊँचे आब्जर्वर डेक का भी निर्माण किया गया है जिसमें एक ही समय में दो सौ लोग मूर्ति का निरिक्षण कर सकते हैं। यहां एक आधुनिक पब्लिक प्लाजा भी बनाया गया है, जिससे नर्मदा नदी व मूर्ति देखी जा सकती है। इसमें खान–पान स्टॉल, उपहार की दुकानें, रिटेल और अन्य सुविधाएँ शामिल हैं। स्टैच्यू ऑफ यूनिटी स्मारक प्रत्येक सोमवार को रखरखाव के लिए बंद रहता है।

वीकेंड पर बना रहे हैं घूमने का प्लान तो गुरुग्राम के पास बसे ये हिल स्टेशन रहेंगे बेस्ट

जब भी हम गर्मियों में घूमने का प्लान बनाते हैं तो दिमाग में सबसे पहले हिल स्टेशन का नाम आता है। लेकिन ज्यादातर हिल स्टेशन पर घूमने के लिए आपको 3–5 दिनों का समय चाहिए। अगस्त में कई लंबे वीकेंड पड़ रहे हैं। ऐसे में अगर आप घूमने जाने का प्लान बना रहे हैं तो गुड़गांव के पास मौजूद इन खूबसूरत हिल स्टेशनों पर घूम सकते हैं। ये हिल स्टेशन गुरुग्राम से कुछ ही दूरी पर स्थित हैं और यहाँ की खूबसूरती आपका मन मोह लेगी –

धनौल्टीः उत्तराखंड में गढ़वाल हिमालय श्रृंखला की तलहटी में बसा धनौल्टी एक खूबसूरत हिल स्टेशन है। यहां सकते हैं। परवाणूः परवाणू,

की प्राकृतिक खूबसूरती पर्यटकों को मंत्रमुग्ध कर देती है। यह जगह गुरुग्राम से लगभग 250 किलोमीटर दूर है। यहां आप वीकेंड पर या छुट्टियों में घूम हिमाचल प्रदेश के सोलन जिले का खूबसूरत हिल स्टेशन है। यह गुरुग्राम से लगभग 6 घंटे की दूरी पर स्थित है। यहां आप खूबसूरत वादियों के बीच अपने दोस्तों और परिवार के साथ समय बिता सकते हैं। परवाणु में रोपवे की सवारी पर्यटकों के बीच बहुत लोकप्रिय है। यहां से आप प्रकृति का एक अलग अनुभव कर सकते हैं।

गुप्तकाशीः उत्तराखंड में स्थित गुप्तकाशी का ध ार्मिक महत्व है। यहां भगवान शिव को समर्पित विश्वनाथ मंदिर पर्यटकों के बीच काफी लोकप्रिय है। यहां पर अर्धनारीश्वर और मणिकर्णिक जैसे कुछ पवित्र तीर्थ स्थल है। यहां पर आप छुट्टियों में अपने परिवार के साथ जा सकते हैं।

नौकुचियाताल: ुरुग्राम से लगभग 360 किलोमीटर दूर स्थित नौकुचियाताल वीकेंड पर घूमने के लिए बेस्ट है। यहां को खूबसूरती देखकर आप अपनी सारी टेंशन भूल जाएंगे। यहां की प्रकृति के बीच आपको सुकून का अनुभव होगा। कनतालः गुरुग्राम के पास स्थित कनताल एक खूबसूरत हिल स्टेशन है। यह शहर लोगों द्वारा काफी कम एक्सप्लोर किया जाता है, जिस वजह से यहां भीड़ और शोर कम रहता है। यहां की हरियाली और सुंदरता आपको मंत्रमुग्ध कर देगी। एडवेंचर लवर्स भी यहां ट्रैकिंग और कैंपिंग का लुत्फ उठा सकते हैं।

अनियमित दिनचर्या दे रही युवाओं में घुटनों का दर्द

महराजगंज। अनियमित दिनचर्या एवं जंक फूड के अधिक सेवन से युवाओं में घुटनों की ग्रीस (सिनोविअल फ्लुइड) कम हो रही है। यही वजह है कि युवाओं में घुटने का दर्द बढ़ रहा है। जिला अस्पताल की ओपीडी में हर दिन पांच से छह युवा घुटनों के दर्द की शिकायत लेकर आ रहे हैं। वहीं, केएमसी डिजिटल अस्पताल में प्रतिदिन 30 से अधिक युवा घुटने के दर्द का इलाज कराने पहुंच रहे हैं। चिकित्सकों का कहना है कि घुटने में ग्रीस कम बनने या नहीं बनने की स्थिति में बुढ़ापे में समस्या और गंभीर हो जाएगी। जिला अस्पताल की ओपीडी में 800 से अधिक मरीज प्रत्येक दिन पहुंचते हैं। हड्डी रोग विशेषज्ञ के पास पांच से छह युवा घुटनों में दर्द की शिकायत लेकर पहुंचते हैं। जिला अस्पताल के फिजियोथैरेपी विभाग में मरीजों को दर्द से छुटकारा दिलाने के लिए उचित व्यायाम कराया जाता है। जिला अस्पताल में तैनात फिजियोथैरेपिस्ट दीपक त्रिपाठी ने बताया कि पहले लोगों में 40 वर्ष के बाद घुटना, शरीर की हड्डियों में दर्द की समस्या आती थी। अब स्थिति यह है कि युवावस्था में ही लोगों के घुटनों में दर्द होने लगा है। समय से पहले युवाओं का शरीर कमजोर होता जा रहा है। यह सब अनियमित दिनचर्या और जंक फूड, ऑयली खाद्य वस्तुओं के अधिक सेवन करने की वजह से हो रहा है। फिजियोथैरेपी कराने वालों में अधिकतर 35 से 40 साल की आयु वाले होते हैं, जिनमें घुटनों में दर्द की समस्या होती है।

एक गिलास दूध पीना जरूरी: चिकित्सकों के अनुसार कैल्शियम में कमी, शराब पीने और कसरत नहीं करने से युवाओं का शरीर सुस्त हो रहा है। शरीर में कैल्शियम की भरपाई के लिए प्रतिदिन एक गिलास दूध पीना जरूरी है।

कम उम्र के लोगों में घुटने का दर्द आमतौर पर गठिया के कारण नहीं होता है। यह पेटेलोफीमोरल सिंड्रोम के कारण हो सकता है। जब कुछ मांसपेशियां अन्य मांसपेशियों की अपेक्षा अधिक काम करती हैं। ऐसे में असंतुलन के कारण घुटने में दर्द होना शुरू हो जाता है। बैठने के गलत तरीके से भी कम उम्र के लोगों में घुटने का दर्द हो सकता है।

– डॉ. विशाल, हड्डी रोग विशेषज्ञ, जिला अस्पताल

ग्रीस बढ़ाने में नारियल पानी मददगार: फिजियोथैरेपिस्ट डॉ. धनंजय कुशवाहा ने बताया कि घुटनों की ग्रीस (सिनोविअल फ्लुइड) बढ़ाने में नारियल पानी मददगार हो सकता है। ओपीडी में कमर व शरीर दर्द की समस्या से पीड़ित युवा हर रोज पहुंचते हैं। शारीरिक काम न करने की वजह से युवाओं में यह दिक्कत देखी जा रही है। ओपीडी में 20 से अधिक युवा शरीर दर्द की शिकायत लेकर आते हैं। इन्हें कैल्शियम, प्रोटीन व विटामिन युक्त चीजों का सेवन करने की सलाह दी जाती है।

12 लोगों पर लूट सहित अन्य धाराओं में केस दर्ज

भटनी। बलुआ अफगान गांव में छह महीने पूर्व हुई मारपीट के मामले में पुलिस ने 12 लोगों पर लूट सहित अन्य गंभीर धाराओं में केस दर्ज किया है। यह कार्रवाई कोर्ट के आदेश पर की गई है। पुलिस मामले की जांच कर रही है। बलुआ अफगान गांव निवासी शंभू सिंह गांव के चौराहे पर लकड़ी की दुकान चलाते हैं। 20 मार्च को शंभू सिंह दुकान पर नहीं थे। आरोप है कि पुरानी रंजिश को लेकर गांव के दर्जनों लोगों ने गोलबंद होकर दुकान पर हमला बोल दिया। दुकान में रखी नकदी लूटने के बाद तोड़फोड़ करने लगे। पत्नी गिरिजा देवी ने विरोध किया तो आरोपी मारपीट करने लगे। इसी दौरान एक महिला का गर्भपात हो गया। आसपास के लोगों के हस्तक्षेप के बाद आरोपी जान से मारने की धमकी देते हुए चले गए। पीड़ित परिवार ने इसकी शिकायत पुलिस से की, लेकिन कोई कार्रवाई नहीं की गई। थक हारकर पीड़ित गिरिजा देवी ने न्यायालय का दरवाजा खटखटाया। करीब छह महीने बाद कोर्ट के आदेश पर सत्यनारायण शर्मा, इष्टदेव, दीपक, रामजीत निषाद, प्रेमचंद्र, प्रमोद, मारकंडेय, सेवानंद, शैलेश, शिशुपाल, शिवनाथ यादव व विनोद पर लूटपाट सहित अन्य गंभीर धाराओं में केस दर्ज किया गया है। जबकि पीड़ित पक्ष पर उसी समय केस दर्ज किया जा चुका था। एसओ संतोष कुमार सिंह ने बताया कि दोनों ओर से केस दर्ज कर मामले की जांच की जा रही है।

नाली साफ कराने के लिए गांव के लोगों ने किया प्रदर्शन

महराजगंज। गौरा गांव के रहने वाले लोगों ने . गांव में नाली साफ कराने की मांग को लेकर प्रदर्शन किया। ग्रामीणों ने जिलाधिकारी को ज्ञापन सौंपकर समस्या का समाधान कराने की मांग की। नाली की सफाई करने में सफाई कर्मियों को रुचि नहीं है। ज्ञापन सौपने आए गोविंद, बसंती, अरवारी, संगीता, विमला आदि ने कहा कि गांव से निकला हुआ गंदा पानी नाली में रूका हुआ है। पोखरी से पहले नाली को मिट्टी डालकर भर दिया गया है। इसे साफ करने की जहमत सफाई कर्मी नहीं उठा रहे हैं। अगर कोई नाली सफाई करने की बात करता है तो उसे बंद करने वाले झगड़ा करना शुरू कर देते हैं। नाली की सफाई नहीं होने से बदबू के कारण सांस लेने में परेशानी हो रही है। संक्रामक रोगों के चपेट में आने का खतरा भी बढ़ गया है।

दहेज हत्या के दोषी पति को सात साल कारावास की सजा

पडरौना। नेबुआ नौरंगिया थाना क्षेत्र के भुजौली शुक्ल में गांव में पांच वर्ष पहले दहेज के लिए हुई विवाहिता की हत्या के मामले में न्यायालय ने फैसला सुना दिया। दोषी पति को कोर्ट ने सात साल के सश्रम कारावास की सजा सुनाई। साथ ही दस हजार रुपये का अर्थदंड लगाया। वहीं, सास–ससुर को दोषमुक्त कर दिया गया। अभियोजन पक्ष की ओर से इस मुकदमे की पैरवी कर रहे शासकीय अधिवक्ता (फौजदारी) जीपी यादव ने बताया कि देवरिया जिले के मदनपुर थाना क्षेत्र अंतर्गत हिरनही गांव के निवासी रामदुलार पांडेय ने दहेज हत्या का मुकदमा दर्ज कराया था। उन्होंने बताया था कि अपनी पुत्री रेशमा पांडेय की शादी उन्होंने कुशीनगर के नेबुआ नौरंगिया थाना क्षेत्र के भुजौली शुक्ल गांव के निवासी उमेश शुक्ला के पुत्र निखिल उर्फ रंजीत शुक्ला से 28 नवंबर 2012 को की थी। उन्होंने बताया था कि ससुराल वाले रेशमा को दहेज के लिए पीटते थे। चार अगस्त 2017 को उनके दामाद निखिल उर्फ रंजीत ने फोन पर बताया कि रेशमा की मौत हो गई है। रामदुलार पांडेय ने नेबुआ नौरंगिया थाने में रेशमा के पति, सास और ससुर पर दहेज प्रतिषेध अधिनियम में मुकदमा दर्ज कराया था। पुलिस ने विवेचना के बाद न्यायालय में आरोप पत्र दाखिल कर दिया था। इस मुकदमे की सुनवाई न्यायाधीश विजय कुमार हिमांशु की कोर्ट में हुई। न्यायालय ने साक्ष्य के आधार पर निखिल उर्फ रंजीत को दहेज हत्या का दोषी पाया और उसे सात साल के सश्रम कारावास की सजा सुनाई। सास व ससुर को साक्ष्य के अभाव में दोषमुक्त कर दिया गया। बचाव पक्ष की ओर से इस मुकदमे की पैरवी राकेश कुमार पांडेय कर रहे थे।

कॉलेज में भोजपुरी गाने पर डांस, वीडियो वायरल

पडरौना। नेबुआ नौरंगिया क्षेत्र के एक महाविद्यालय में भोजपुरी गाने पर डांस का वीडियो शाम सोशल मीडिया पर वायरल हो गया। वीडियो में भोजपुरी गाने पर कॉलेज के कुछ शिक्षक डांस करते नजर आ रहे हैं। यह वीडियो कॉलेज में गत दिनों हुए एक कार्यक्रम से संबंधित बताया जा रहा है। इस वीडियो को कॉलेज के किसी छात्र या फिर स्टाफ ने सोशल मीडिया पर पोस्ट किया, जो वायरल हो गया। नेबुआ नौरंगिया क्षेत्र में एक महाविद्यालय है, जिसमें कुछ दिनों पूर्व एक कार्यक्रम का आयोजन किया था। इसके लिए कॉलेज के कमरे को सजाया गया। कार्यक्रम में कॉलेज की शिक्षिकाएं, छात्र–छात्राओं सहित अन्य लोग भी मौजूद थे। इस दौरान भोजपुरी का एक गाना बजाकर डांस किया गया, जिसका वीडियो बना। पूरे दिन वीडियो को लेकर चर्चा होती रही।

बाइक से गिरकर महिला की मौत

उजारनाथ। पटहेरवा थाना क्षेत्र के गांव सेंदुरिया बुजुर्ग निवासी महिला की बाइक से गिरकर मौत हो गई। . देर रात वह अस्पताल में भर्ती बीमार रिश्तेदार से मिलकर देवर के साथ बाइक से घर लौट रही थी। सेंदुरिया बुजुर्ग गांव की समीमा खातून (35) पत्नी समरुद्दीन अंसारी के एक रिश्तेदार कसया के निजी अस्पताल में भर्ती हैं। . शाम समीमा अपने देवर अनवारुल अंसारी के साथ उनका हालचाल लेने बाइक से अस्पताल गई। वहां से देर रात देवर–भाभी घर लौट रहे थे। पटहेरवा थाना के गांव मतलुक छापर के पास अचानक समीमा बाइक से अचेत होकर सड़क पर गिर गई। उनके सिर में चोट लगी। देवर किसी तरह से उन्हें जिला अस्पताल लेकर पहुंचा, वहां डॉक्टर ने महिला को मृत घोषित कर दिया। परिजनों ने . सुबह महिला का दाह संस्कार करा दिया।

बाइक से गिरकर महिला की मौत

उजारनाथ। पटहेरवा थाना क्षेत्र के गांव सेंदुरिया बुजुर्ग निवासी महिला की बाइक से गिरकर मौत हो गई। देर रात वह अस्पताल में भर्ती बीमार रिश्तेदार से मिलकर देवर के साथ बाइक से घर लौट रही थी। सेंदुरिया बुजुर्ग गांव की समीमा खातून (35) पत्नी समरुद्दीन अंसारी के एक रिश्तेदार कसया के निजी अस्पताल में भर्ती हैं। शाम समीमा अपने देवर अनवारुल अंसारी के साथ उनका हालचाल लेने बाइक से अस्पताल गई। वहां से देर रात देवर–भाभी घर लौट रहे थे। पटहेरवा थाना के गांव मतलुक छापर के पास अचानक समीमा बाइक से अचेत होकर सड़क पर गिर गई। उनके सिर में चोट लगी। देवर किसी तरह से उन्हें जिला अस्पताल लेकर पहुंचा, वहां डॉक्टर ने महिला को मृत घोषित कर दिया। परिजनों ने सुबह महिला का दाह संस्कार करा दिया।

निर्माणाधीन आईटीआई के पिलर में दम नहीं, गेट भी मिले टेढ़े–मेढ़े

देवरिया। डीएम जितेंद्र प्रताप सिंह ने देसही देवरिया ब्लॉक के डिघवा पौटवा गांव में निमार्णाधीन राजकीय आईटीआई का निरीक्षण किया। इसमें कई खामियां मिलीं। उन्होंने पिलर का एलाइमेंट, शटरिंग सही मिलने तथा गुणवत्ता में कमी मिलने पर पैकफेड के अधिशासी अभियंता एवं सहायक अभियंता को फटकार लगाई। साथ ही जांच के लिए समिति गठित करने के निर्देश दिए।

डीएम दोपहर एक बजे डिघवा पौटवा पहुंचे, जहां 12.60 करोड़ रुपये की लागत से उत्तर प्रदेश राज्य निर्माण सहकारी लिमिटेड (पैकफेड) की ओर से राजकीय आईटीआई का निर्माण किया जा रहा है। निरीक्षण में अधिशासी अभियंता ने बताया कि निर्माण कार्य जनवरी माह 2022 में प्रारंभ हुआ, जिसे दो वर्षों में पूर्ण किया जाना है। जिलाधिकारी ने भवन के शटरिंग कार्य में निर्धारित सामग्री के स्थान पर ईंट से करने पर नाराजगी जताई। निर्माणाधीन भवन में पिलर के एलाइनमेंट में भी खामियां मिलीं। भवन का प्रवेश द्वार भी टेढ़ा–मेढ़ा मिला।

इसके अलावा निर्माण कार्य में दोयम दर्जे की ईंट का प्रयोग होते दिखा। पिलर में प्रयुक्त सरिया भी मानक के अनुरूप नहीं मिली। निर्माण स्थल पर ठेकेदार द्वारा साइट इंजीनियर भी नहीं तैनात किया गया था। यह देख जिलाधिकारी ने पैकफेड के अधिशासी अभियंता एवं सहायक अभियंता को फटकार लगाई। उन्होंने अधिशासी अभियंता (सिंचाई) डीके गर्ग की अध्यक्षता में एक जांच समिति गठित करने का निर्देश दिया, जो परियोजना के अब तक की प्रगति पर अपनी रिपोर्ट सौंपेगी।

डीएम ने कहा कि मानक विरुद्ध हुए कार्य में उत्तरदायित्व तय करके कड़ी कार्रवाई की जाएगी। लापरवाही बरतने वाले एवं खराब पर्यवेक्षण करने वाले जिम्मेदार अधिकारियों को किसी भी कीमत पर बख्शा नहीं जाएगा। उन्होंने कहा कि परियोजनाएं शासन की मंशानुरूप स्वीकृत इस्टीमेट के अनुसार निर्धारित मानकों का अनुपालन करते हुए समय से पूर्ण कराई जाए। इसमें लापरवाही बर्दाश्त नहीं होगी।

नगरपालिका सीमा विस्तार की अधिसूचना जारी, 23 गांव हो गए शहर का हिस्सा

देवरिया। नगर पालिका सीमा विस्तार में शामिल होने वाले 23 गांवों की शासन ने अधिसूचना जारी कर दी है। संबंधित पत्र जिलाधिकारी को मिल गया है। अब जिला प्रशासन इन गांवों के गाटा संख्या का गजट करेगा। इसको लेकर संबंधित गांवों के लोगों में हर्ष है।

पिछले सप्ताह कैबिनेट ने देवरिया नगरपालिका के सीमा विस्तार को मंजूरी दी थी। इसमें पास के 23 गांवों को नगरपालिका का हिस्सा बना दिया गया है। सीमा विस्तार होने में कुल 19316 गाटा संख्या शामिल किए गए हैं। जबकि इन ग्रामों का क्षेत्रफल 5246.917 हेक्टयर है। इसमें बंजर भूमि, खलिहान, पोखरी, पार्क, आबादी और चक मार्ग, नवोदय विद्यालय, पालीटेक्निक, आईटीआई भी शामिल हैं।

प्रमुख सचिव अमृत अभिजात ने अधिसूचना में बताया है कि 16 दिसंबर 2020 आपत्ति और सुझाव मांगे गए थे। जिसका निराकरण भी कर दिया गया है। अधिसूचना निर्गत होने से अब ये गांव नगरपालिका क्षेत्र में आधिकारिक रूप से शामिल हो गए है।

सीमा विस्तार में ये गाटा संख्या हुए शामिल

तिलई बेलवा गाटा 398, परसिया उर्फ खरजरवा 174, डंभर उर्फ जटमलपुर 185, पगरा उर्फ परसियां 360, बरवा गोरस्थान 183, बड़हरा 571, चिंतामन चक 150, पिपरपाती 174, गोबराई खास 455, मेहड़ा नगर बाहर 1421, धनौती खुर्द 179, मुड़ाडीह 653, सकरापार 1323, देवरिया खास, बभनी 256 , रामपुर खुर्द 248, भीमपुर 649, पिड़रा 281, रघवापुर 649, कतरारी 688, दानोपुर 474, सोंदा 485, कठिनइया 360 , रामनाथ, कतरारी बाहर, देवरिया खास अंदर, भरौली बाजार, बांस देवरिया, चकियानगर, गरूलपार, पिड़र नगर अंदर के गाटा को शामिल किया गया है।

अधिसूचना निर्गत करने के लिए शासन से पत्र आ गया है। अब आगे की प्रक्रिया शुरू की जाएगी। नए गाटा संख्या शामिल होने से नगरपालिका का क्षेत्रफल बढ़ जाएगा।

तत्काल करें विद्युत उपभोक्ताओं की शिकायतों का निस्तारण

महराजगंज। विद्युत निगम के अधिकारी व कर्मचारी उपभोक्ताओं की शिकायतों का त्वरित व गुणवत्ता पूर्ण तरीके से निदान करें। समाधान सप्ताह में आने वाले शिकायतकर्ताओं के बैठने व पीने के शुद्ध पानी की भी व्यवस्था की जाए। इसमें किसी प्रकार की लापरवाही न बरती जाए। ये बातें बैकुंठपुर व परतावल विद्युत उपकेंद्र पर आयोजित विद्युत समाधान सप्ताह शिविर में ऊर्जा एवं वैकल्पिक ऊर्जा राज्यमंत्री सोमेंद्र तोमर ने कहीं। मंत्री ने कहा कि शिविर में आने वाले उपभोक्ताओं की समस्या को दूर करना कर्मियों की जिम्मेदारी है। उन्होंने आए 12 शिकायतों का विवरण जाना तथा शिकायत कर्ता रामविलास व दिलीप से मोबाइल पर वार्ता कर जानकारी ली। शिकायत कर्ताओं की ओर से बताया गया कि उनकी समस्या का निदान हो गया है। मौके पर मौजूद उपभोक्ता योगेंद्र से उन्होंने बात की तो उसने एक माह का विद्युत बिल 54 हजार आने की बात कही, जिस पर उन्होंने तत्काल उसकी समस्या का निदान कराने को कहा। इस दौरान अपर जिलाधिकारी डॉ. पंकज कुमार वर्मा, अधीक्षण अभियंता वाईपी सिंह, अधिशासी अभियंता हरिशंकर, विपिन चंद्र, आरके गौतम आदि मौजूद रहे। गांवों को भी न्यूनतम 18 घंटे मिलेगी विद्युत आपूर्ति: ऊर्जा एवं वैकल्पिक ऊर्जा राज्यमंत्री ने कहा कि जिले के ग्रामीण क्षेत्रों में न्यूनतम 18 घंटे विद्युत आपूर्ति किए जाने के निर्देश दिए गए हैं। प्रदेश सरकार की ओर से 24 घंटे विद्युत आपूर्ति सुनिश्चित कराए जाने की दिशा में सार्थक पहल की जा रही है।

विकास के नाम पर भाजपाई करते हैं झूठी बातें : जूही सिंह

पडरौना। सपा महिला सभा की राष्ट्रीय अध्यक्ष जूही सिंह ने कहा कि प्रदेश की जनता जानती है कि भाजपा झूठ बोलने वाली पार्टी है। विकास के नाम पर भाजपाई झूठी बातें करते हैं। वह कुशीनगर में एक होटल में पत्रकारों से बातचीत कर रही थीं। उन्होंने कहा कि प्रदेश में विकास अखिलेश यादव की देन है और भाजपा उसे अपना बता रही है। दरअसल, भाजपा की सरकार ने कुछ किया नहीं तो दूसरों के काम को ही अपना नाम देने में लगी। उन्होंने कहा कि सपा के सदस्यता अभियान से पार्टी को मजबूती मिल रही है।

उन्होंने कहा कि सपा के राष्ट्रीय अध्यक्ष अखिलेश यादव का सम्मान हर जगह है। प्रदेश के दोनों उपमुख्यमंत्री संपर्क में हैं। अगर जुड़ेंगे तो सपा उनके सम्मान के लिए कोई निर्णय लेने से नहीं हिचकेगी।

कहा कि कार्यकर्ताओं के सम्मान में सपा कहीं पीछे नहीं हट रही। प्रदेश के कई जिलों में कार्यकर्ताओं के साथ हुई कार्रवाई का सपा ने पुरजोर विरोध किया है। उन्हें न्याय दिलाने का काम सपा कर रही है। उन्होंने कहा कि भाजपा सरकार पार्टी कार्यकर्ताओं के अलावा पत्रकारों पर भी मुकदमा दर्ज कराने का काम कर रही है। महंगाई और बेरोजगारी पर लगाम के लिए सरकार कोई ठोस फैसले नहीं ले रही।

उन्होंने कहा कि कुशीनगर अंतरराष्ट्रीय एयरपोर्ट का बीते वर्ष अक्तूबर में देश के प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने लोकार्पण कर दिया, लेकिन यहां से सिर्फ एक घरेलू उड़ान ही है। यहां से अंतरराष्ट्रीय उड़ानें होनी चाहिए, लेकिन मुख्यमंत्री और प्रधानमंत्री इसके लिए संजीदा नहीं हैं।

इस सरकार में सिर्फ एमओयू पर हस्ताक्षर हो रहे हैं। एक सवाल के जवाब में कहा कि सपा मजबूत पार्टी है। समझौता होगा तो रिश्ता निभाएंगे। भाजपा से देश को बचाना है। कहा कि पब्लिक सेक्टर की जमीन निजी हाथों में बेची जा रही है। देश की अर्थव्यवस्था चरमरा गई है। उन्होंने तंज कसते हुए कहा कि मुख्यमंत्री को यह पता नहीं है कि विश्व में भारत किस मानव विकास सूचकांक पर है। बताया कि वर्तमान में भारत की रैंक 132 है, जबकि यह रैंक 2020 में 130 थी, जिसमें गिरावट दर्ज हुई है।

इस मौके पर सपा नेता राजेश प्रताप राव, अक्षय पांडेय, प्रसून जायसवाल, प्रदीप सिंह सैंथवार, भूपेंद्र सिंह, सिकंदर आलम, अमेरिकन खरवार, अजय प्रताप यादव, राहुल तिवारी, चंदन राज, विवेक सिंह आदि मौजूद थे।

बीएसएन ग्लोबल स्कूल में हिन्दी दिवस पर बच्चों ने दिखाई प्रतिभा

हिंदी हमारे संस्कारों की भाषा है-जे.के. जायसवाल

दैनिक बुद्ध का संदेश

गोरखपुर। हिन्दी दिवस के अवसर पर बुधवार को बीएसएन ग्लोबल स्कूल शाहपुर के तत्वावधान में कविता पाठ और पोस्टर मेकिंग प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। जिसमें बच्चों ने उत्साहपूर्वक प्रतिभाग किया।

पोस्टर मेकिंग में अभिनव राय, याशमिन और अरुणा राय ने क्रमशः प्रथम, द्वितीय और तृतीय स्थान प्राप्त किया। कविता पाठ में आलोक, आख्या मौर्य और पलक ने क्रमशः प्रथम, द्वितीय और तृतीय स्थान प्राप्त किया। कृति, मंतशा, मोमिना, कृतार्थ रितिका आदि के कविताओं को भी सराहना मिली। कार्यक्रम में विद्यालय के निदेशक जे के जायसवाल ने बच्चों को सम्बोधित करते हुए कहा कि भारत में सबसे अधिक बोली जाने वाली और विश्व में तीसरे क्रम की भाषा हिन्दी भारत के गौरव के प्रतीक की भाषा है। हिंदी हमारी आत्मा की भाषा है, यह हमारे संस्कारों की भाषा है। इंग्लैण्ड, अमेरिका, फ्रांस, जर्मनी आदि सभी देशों में वहां की उनकी अपनी भाषाएं राष्ट्रभाषाएं हैं।केवल भारत ही ऐसा देश है, जहां अपनी कोई राष्ट्रभाषा नहीं है। अतः हिन्दी दिवस हमें यह याद दिलाता है कि हम सबको मिल कर हिन्दी को भारत की राष्ट्रभाषा बनाना है। महात्मा गांधी ने कहा था कि राष्ट्रभाषा के बिना राष्ट्र गूंगा है। अलग–अलग लोगों को एक धागे में पिरोने का जरिया है हिन्दी। उन्होंने कहा था कि बिना हिन्द भाषा के विकास के देश का विकास संभव नहीं है। कार्यक्रम का संचालन हिन्दी की शिक्षिका चंद्रमति यादव ने किया। इस अवसर पर चन्द्रकला मौर्य, वर्षा श्रीवास्तव, कुसुम, सुमन, प्रतिभा, बबीता आदि मौजूद रहे।

सड़क बेहाल गांव वासी परेशान

दैनिक बुद्ध का संदेश

देवरिया। भटनी ग्राम विरसिंहपुर चौराहा भटनी ब्लाक अनिल यादव के दूकान के ठीक सामने ये खड़जा रोड है जिस पर कई गावों की जनता जाती है।

इस रोड पर और पूरी तरह से टूट चूका है फोरविलर जाने में दिक्कत होता है और बाइक ले जाने में भी लोग डर रहे है की कही हाथ पैर टूट न जाये भटनी ब्लाक 12 साल हो गया है। लेकिन उसके बाद आज तक न ही रिपेरिग नहीं कराई है और न ही सफाई 2 साल से भटनी ठक्व् और सिग्रेटरी को भी कई बार अप्लिकेशन दिया जा रहा है। और प्रधान से भी बोला जा चूका है लेकिन ये रोड़ केवल कागज में ही बनता है। पूछने पर भटनी बीडीओ और सिग्रेटरी और प्रधान का कहना है की बजट नहीं आया है अभी आएगा तो बन जायेगा 12 सालो में इस रोड़ का वजट ही नहीं आया है।

20 हजार का इनामी गिरफ्तार, चरस बरामद

डिबनी बंजरवा। तमकुहीराज थाने की पुलिस ने एक आरोपी को गिरफ्तार करके उसके पास से चरस बरामद की है। गिरफ्तार आरोपी पर 20 हजार रुपये का इनाम था। उसके खिलाफ कुशीनगर सहित गोरखपुर जिले में भी कई केस दर्ज हैं। तमकुहीराज एसएचओ अश्विनी राय ने बताया कि टड़वा से बिहार जाने वाली सड़क पर खुदुरा गांव के पास एक संदिग्ध व्यक्ति दिखाई दिया। उसे रोककर पुलिस ने तलाशी ली तो उसके पास से मादक पदार्थ मिला। आरोपी की पहचान अजीमुल्लाह निवासी लतवा मुरलीधर थाना तमकुहीराज के रूप में हुई है। उस पर मुकदमा दर्ज करके कार्रवाई जा रही है।

भूमिहीन गरीबों को आवास एवं कृषि के लिए भूमि आवंटन किए जाने का दिया निर्देश

राजस्व वसूली में तेजी लाते हुए लक्ष्य शप्रतिशत प्रगति का दिया निर्देश, प्रवर्तन कार्य में लापरवाही पर खनन अधिकारी का स्पष्टीकरण तलब

दैनिक बुद्ध का संदेश

बलरामपुर। जिलाधिकारी डॉ महेंद्र कुमार की अध्यक्षता में कर–करेत्तर एवं राजस्व वसूली की समीक्षा बैठक संपन्न हुई। जिलाधिकारी द्वारा विभिन्न विभागों वाणिज्य कर विभाग, स्टांप, बैंक, विद्युत, परिवहन विभाग, खनन, नगर पालिका, मंडी समिति, विधिक माप विज्ञान द्वारा किए जा रहे राजस्व वसूली की समीक्षा की गई, उन्होंने राजस्व वसूली में और तेजी लाते हुए लक्ष्य के सापेक्ष राजस्व प्राप्ति का निर्देश दिया। प्रवर्तन कार्य की समीक्षा के दौरान जिलाधिकारी ने सहायक आयुक्त स्टांप को स्टांप चोरी आदि के प्रकरण को पकड़े जाने की कार्रवाई में तेजी लाए जाने का निर्देश दिया, उन्होंने कहा कि 20 लाख से अधिक की रजिस्ट्री की गहन समीक्षा करें। एआरटीओ को रोड टैक्स ना जमा करने वाले प्राइवेट वाहनों पर सख्त कार्रवाई किए जाने का निर्देश दिया, कहा कि नोटिस देने के बावजूद रोड टैक्स नहीं जमा कर रहे हैं वाहनों का रजिस्ट्रेशन निलंबित करे। प्रवर्तन कार्य में लापरवाही बरतने पर खनन अधिकारी का स्पष्टीकरण व बैठक से नदारद नदारद एसडीओ फॉरेस्ट को स्पष्टीकरण तलब किए जाने का निर्देश दिया। तहसीलों में

राजस्व कोर्ट में लंबित 5 वर्ष से अधिक के मुकदमों का प्राथमिकता के साथ शतप्रतिशत निस्तारण किए जाने का निर्देश दिया। उन्होंने सभी उप जिलाधिकारियों को भूमिहीन गरीब व्यक्तियों को अभियान चलाकर आवास एवं कृषि योग्य भूमि आवंटित किए जाने का निर्देश दिया, उन्होंने कहा कि सभी उप जिलाधिकारी 500 भूमिहीन व्यक्तियों को आवास एवं कृषियोग्य भूमि आवंटन किए जाने का लक्ष्य रखें।

उन्होंने तहसीलों में जन गारंटी योजना के तहत बनने वाले जाति प्रमाण पत्र, आय प्रमाण पत्र को निर्धारित समयावधि के भीतर जारी किए जाने का निर्देश दिया।

जिलाधिकारी ने निर्देश दिया कि तहसील स्तर पर वृद्धा पेंशन योजना, दिव्यांग पेंशन योजना, निराश्रित महिला पेंशन योजना आदि के सत्यापन हेतु कोई भी आवेदन लंबित ना रहे। आइजीआरएस के तहत शिकायतों का गुणवत्तापूर्ण एवं समयबद्ध ढंग से निस्तारण का निर्देश दिया। इस अवसर पर अपर जिलाधिकारी राम अभिलाष, अपर जिलाधिकारी न्यायिक डॉ ज्योति गौतम, उप जिला अधिकारी बलरामपुर सदर राजेंद्र बहादुर, उप जिलाधिकारी उतरौला संतोष कुमार ओझा, उप जिलाधिकारी तुलसीपुर मंगलेश दुबे, अपर उपजिलाधिकारी न्यायिक तुलसीपुर ओम प्रकाश, समस्त तहसीलदार, समस्त अधिशासी अधिकारी नगर पालिकाध्नगर पंचायत, उपायुक्त वाणिज्य कर इम्तियाज सिद्धकी, एआरटीओ अरविंद यादव व अन्य संबंधित अधिकारीध कर्मचारीगण उपस्थित रहे।

ओबरा महाविद्यालय में पी.जी. प्रथम वर्ष में प्रवेश हेतु आवेदन प्रारम्भ

दैनिक बुद्ध का संदेश

ओबराध्सोनभद्र। नगर स्थित राजकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय ओबरा में एमए,एमएससी, एमकॉम प्रथम वर्ष शैक्षणिक सत्र 2022–23 में प्रवेश हेतु आनलाइन आवेदन पत्र दिनांक 13 सितम्बर 2022 से भरना प्रारम्भ हो गया है। उक्त आशय की जानकारी देते हुए महाविद्यालय के प्राचार्य प्रोफेसर डॉ प्रमोद कुमार ने बताया कि प्रवेश लेने हेतु इच्छुक छात्र–छात्रा महाविद्यालय की वेबसाइट पर आन लाइन आवेदन कर सकते हैं।

हिंदी राष्ट्रभाव की सरस अभिव्यक्ति है

दैनिक बुद्ध का संदेश

सोनभद्र। डीएवी पब्लिक सीनियर सेकेंडरी स्कूल बीना में हिंदी दिवस के भव्य आयोजन से हिंदी पखवाड़े का शुभारंभ किया गया। हिंदी विभागाध्यक्ष डॉ. दिनेश मिश्र ने प्रभारी प्रधानाचार्य ऊर्मिला त्रिपाठी को पुष्पगुच्छ प्रदान कर स्वागत किया और हिंदी के विकास

के विभिन्न आयामों की चर्चा करते हुए हिंदी को राष्ट्रभाव की सरस एवं ओजदिप्त अभिव्यक्ति की भाषा बताया। अपने अध्यक्षीय संबोधन में ऊर्मिला त्रिपाठी ने हिंदी के महत्त्व से बच्चों को परिचित कराते हुए उसे रोजगारपरक और देशसेवा की सशक्त भाषा बताया। इस अवसर पर जूनियर और सीनियर वर्ग के विद्यार्थियों के लिए भाषण प्रतियोगिता आयोजित की गई। निर्धारित विषय श्मेरा प्रिय कविश् पर प्रतिभागियों ने संत–भक्त कवियों के साथ साथ राष्ट्र चेतना का शंखनाद करके राष्ट्र को आजाद कराने वाले कवियों के जीवन और उनकी कालजयी रचनाओं के संदर्भों से हिंदी का अभिनंदन किया। प्रतिभागियों की अभिव्यक्ति कला का मूल्यांकन शिक्षक रमेश त्रिपाठी और लव शुक्ला, संचालन रश्मिता तिवारी ने किया। कार्यक्रम का संयोजन हिंदी विभाग की ओर से सुनीता मिश्रा, रश्मि देवी, नीलू वर्मा और मिनी सिंह द्वारा किया गया। कार्यक्रम का समापन शांतिपाठ से किया गया।

किसान और नौजवानों को एक होने की बहुत जरूरत

दैनिक बुद्ध का संदेश

बुलन्दशहर। बुद्धवार को भारतीय किसान यूनियन एस के तत्वाधान में आयोजित प्रेस कॉन्फ्रेंस को सम्बोधित करते हुए भारत बचाओ, संविधान बचाओ आंदोलन के राष्ट्रीय अध्यक्ष संजय गुर्जर ने कहा कि आज किसान और नौजवानों को एक होने की बहुत जरूरत है नहीं तो देश पूरी तरह साम्प्रदायिक ताकतों के हाथों में चला जाएगा। धार्मिकता के नाम पर सत्ता काबिज करना सब से बड़ा छल है पुरुषोत्तम रामचन्द्र जी के नाम का सहारा लेकर पिछले तीन दशकों से बीजेपी जनता को धर्म के नाम पर मूर्ख बना रही है। देश का संविधान किसी को भी धर्म के नाम पर राजनीति करने की अनुमति नहीं देता। राम के नाम को बदनाम किया जा रहा है, राम नाम ही त्याग का नाम है। रामचन्द्र ने कभी किसी भी धर्म व समाज से नफरत नहीं की, भील जाति की शबरी के झूठे बेर राम ने खाये थे। राम जी के नकली भक्त प्रभु की आस्था पर चोट पहुंचा रहें हैं, चोला राम का पहन कर दुराचारी ओर सामंतवादी सोच को अपनाए हैं। ये वे लोग हैं जो पिछड़ों, दलितों से हद से ज्यादा नफरत करते हैं और जो लोग इंसानियत से नफरत करते हैं वे रामभक्त हो ही नहीं सकते। देश और समाज को बचाना ही भारत

बचाओ, संविधान बचाओ आंदोलन व सहयोगी संगठनों का उद्देश्य है। भारतीय किसान यूनियन एस के राष्ट्रीय अध्यक्ष खुर्शीद आलम अहारवी ने कहा कि किसानों को सदियों से ठगा गया है, आज हम लोग जय जवान जय किसान, जय संविधान के नारे को लेकर चल रहे हैं। निश्चित ही जीत हम लोगो की होगी, कई लाख किसान बर्बाद हो चुके हैं। बहुत से किसानों के खाते ही बन्द हो गये, फिर यह सरकार कौन से विकास की बात कर रही है। भारत बचाओ, संविधान बचाओ आंदोलन के राष्ट्रीय महासचिव मौहम्मद नईम मंसूरी ने कहा कि देश को बचाना ही हमारा मुख्य उद्देश्य है, भारत बचाओ, संविधान बचाओ आंदोलन देश और समाज को बचाने की लड़ाई लड़ रहा है और देश में केवल भारत बचाओ, संविधान बचाओ आंदोलन ही राष्ट्रीय एकता का संगठन है। सभी को जुड़कर मजबूती से संघर्ष करना होगा। इस मौके पर बबली गुर्जर, युसुफ मलिक आजाद मलिक, फकरुदीन मेवाती, युसूफ अलवी, साबिर सैफी, चारणवीर, इमाम सैफी, रिहाना, गजेंद्र सिंह पाल सहित पांच दर्जन लोग मौजूद रहे।

हिन्दी दिवस पर आयोजित हुई निबंध,भाषण प्रतियोगिता

दैनिक बुद्ध का संदेश

बर्डपुर/सिद्धार्थनगर। बुद्धवार को हिन्दी दिवस के अवसर आदर्श लघु माध्यमिक बर्डपुर में हिंदी को बढ़ावा देने को लेकर निबंध, भाषण एवं अन्य प्रतियोगिताओं का आयोजन किया गया। जिसमें

विद्यालय के छात्र छात्राओं ने बढ़ चढ़ कर हिस्सा लिया। इस दौरान प्रधानाचार्या राजकुमारी पाण्डेय, संचालक नितेश पाण्डेय, संतोष यादव, उमेश यादव, पवन कुमार पाठक, कलीम अंसारी, अफजल आदि ने हिंदी दिवस की शुभकामना दिया।

समस्याओं से पलायन करने वाले खो देते हैं जनविश्वास : सीएम योगी

गोरखपुर,(आरएनएस)। गोरक्षपीठाधीश्वर एवं मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने कहा कि हमारी सनातन संस्कृति समाज, राष्ट्र व धर्म की समस्याओं से पलायन की आज्ञा नहीं देती है। समाज, राष्ट्र व धर्म की समस्या को हमें अपनी खुद की समस्या मानना होगा। हमें खुद को हर चुनौती से निरंतर जूझने के लिए तैयार रखना होगा क्योंकि समस्याओं से पलायन करने वाले, उनसे मुंह मोड़ने वाले जनविश्वास खो देते हैं। पलायन करने वालों को वर्तमान और भावी पीढ़ी कभी माफ नहीं करती है। सीएम योगी युगपुरुष ब्रह्मलीन महंत दिग्विजयनाथ जी महाराज की 53वीं तथा राष्ट्रसंत ब्रह्मलीन महंत अवेद्यनाथ जी महाराज की 8वीं पुण्यतिथि के उपलक्ष्य में आयोजित साप्ताहिक श्रद्धांजलि समारोह के अंतिम दिन बुधवार (आश्विन कृष्ण चतुर्थी) को महंत अवेद्यनाथ की पुण्यतिथि पर श्रद्धासुमन अर्पित कर रहे थे। श्रद्धांजलि समारोह में अपने भावों को शब्दांकित करते हुए मुख्यमंत्री ने कहा कि गोरक्षपीठ के पूज्य आचर्यद्वय ब्रह्मलीन महंत दिग्विजयनाथ और ब्रह्मलीन महंत अवेद्यनाथ ने ने धर्म, समाज और राष्ट्र की समस्याओं से पलायन न करने का आदर्श स्थापित किया। उनके मूल्यों, सामर्थ्य और साधना की सिद्धि का परिणाम आज गोरखपुर के विभिन्न विकल्पों के माध्यम से देखा जा सकता है। उन्होंने गोरक्षपीठ को सिर्फ पूजा पद्धति और साधना स्थली तक सीमित नहीं रखा, बल्कि शिक्षा, स्वास्थ्य और सेवा के विभिन्न आयामों से जोड़कर लोक कल्याण का मार्ग प्रशस्त किया। सीएम योगी ने कहा कि गोरक्षपीठ की परंपरा सनातन धर्म की महत्वपूर्ण कड़ी है। आश्रम पद्धति कैसे संचालित होनी चाहिए, समाज, देश और धर्म के प्रति हमारी क्या जिम्मेदारी होनी चाहिए, इसका मार्गदर्शन इस पीठ ने किया है। ऐसे दौर में जब बहुतायत लोग भौतिकता के पीछे दौड़ते हैं, देशकाल व समाज के अनुरूप कार्यक्रमों से जुड़कर यह पीठ ब्रह्मलीन महंत दिग्विजयनाथ व ब्रह्मलीन महंत अवेद्यनाथ द्वारा स्थापित आदर्शों को युगानुकूल तरीके से आगे बढ़ा रही है। उन्होंने कहा कि जब देश पराधीन था तब यह धार्मिक पीठ सीमित संसाधनों से शिक्षा का अलख जगाने के अभियान से जुड़ती है। पूज्य संतों ने आजादी के आंदोलन को नेतृत्व दिया, उसने भागीदार बने और इस दिशा में गोरक्षपीठ की भी महत्वपूर्ण भूमिका रही। जब धर्म भी पराधीनता के दंश को झेल रहा था तो गोरक्षपीठ खुद को कैसे अलग रख सकती थी। सीएम योगी ने कहा कि आजादी का आंदोलन हो या आजादी मिलने के बाद राष्ट्र निर्माण के अभियान को गति देने की बात, गोरक्षपीठ ने महंत दिग्विजयनाथ व महंत अवेद्यनाथ के नेतृत्व में निरंतर प्रयास किया। मुख्यमंत्री ने कहा कि अयोध्या में प्रभु श्रीराम के भव्य मंदिर निर्माण के मार्ग प्रशस्त होने से भारत के लोकतंत्र व न्यायपालिका की ताकत वैश्विक मंच पर प्रतिष्ठित हुई है। अंतरराष्ट्रीय योग दिवस का आयोजन हो या फिर प्रयागराज दिव्य एवं भव्य कुंभ। हमारे सांस्कृतिक विजय के इस अभियान का हिस्सा है। यही नहीं अब भारतीय नस्ल के गोवंश संरक्षण की वकालत वैश्विक मंचों से की जा रही है। अति भौतिकता के पीछे पड़कर अर्जित की गई गंभीर बीमारियों से बचने के लिए प्राकृतिक खेती पर दुनिया जोर दे रही है और प्राकृतिक खेती के लिए भारतीय ही गोवंश आधार होगा। इससे गाय भी बचेगी और मानवता को बीमारियों से मुक्ति भी मिलेगी। कुल मिलाकर वैश्विक मंच पर भारत की प्रतिष्ठा बढ़ी है और हम सभी को इस पर गौरव की अनुभूति करनी चाहिए। अपने संबोधन में मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने पूर्वी उत्तर प्रदेश में इंसेफेलाइटिस से होने वाली मासूमों की मौतों का भी उल्लेख किया। उन्होंने कहा कि 1977 से 2017 तक प्रतिवर्ष 1200 से 1500 बच्चे इस बीमारी के चलते दम तोड़ देते थे। 40 साल में 50 हजार मौतें हुईं। दम तोड़ने वाले बच्चे इसी समाज की धरोहर थे। 2017 के बाद से सरकार ने स्वच्छता के प्रति जन जागरूकता बढ़ाकर,शासन–प्रशासन के साथ जनता के सहयोग से बीमारी का समाधान निकाला। इन सब का परिणाम यह है कि इंसेफलाइटिस से होने वाली मौतें अब शून्य की तरफ हैं।सीएम योगी ने कहा कि वर्तमान समय में अपना देश आजादी का अमृत महोत्सव मना रहा है। आजादी के शताब्दी वर्ष तक हमारा लक्ष्य भारत को विकसित एवं दुनिया की महाताकत बनाने का होना चाहिए। इस लक्ष्य की प्राप्ति के लिए हम सभी को विगत स्वाधीनता दिवस पर प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी द्वारा दिए गए पंच प्रणों से जुड़ना होगा। हमें अपनी विरासत पर गौरव की अनुभूति करनी होगी। विकसित भारत बनाने के लिए अपने अपने कार्य क्षेत्र के कर्तव्यों का ईमानदारी पूर्वक निर्वहन करना होगा। गुलामी के किसी भी अंग को स्वीकार नहीं करना होगा। हर भारतीय के मन में अभाव होना चाहिए कि अपना देश व धर्म सुरक्षित है। यह प्रसन्नता की बात है कि देश अच्छी दिशा में आगे बढ़ रहा है। अपनी दादागुरु ब्रह्मलीन महंत दिग्विजयनाथ एवं गुरुदेव ब्रह्मलीन महंत अवेद्यनाथ की पुण्य स्मृति को नमन करते हुए मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने कहा कि ब्रह्मलीन महंतद्वय का व्यक्तित्व एवं कृतित्व सदैव प्रेरणादायी है। श्रीराम मंदिर आंदोलन का नेतृत्व करने के साथ ही उन्होंने गोरक्षा, शिक्षा, स्वास्थ्य और सेवा के विभिन्न प्रकल्पों को प्रवाहमान बनाया। श्रद्धांजलि समारोह में प्रयागराज से पधारे जगद्गुरु शंकराचार्य स्वामी वासुदेवानंद सरस्वती ने कहा कि गोरक्षपीठाधीश्वर योगी आदित्यनाथ के मुख्यमंत्री बनने के बाद जैसे अयोध्या में भगवान श्रीराम की जन्मभूमि पर भव्य मंदिर बन रहा है, उन्हें पूरा विश्वास है कि मथुरा और काशी का पुनरुद्धार भी उन्हीं के नेतृत्व में होगा। उन्होंने कहा कि उनकी इच्छा है कि मथुरा में श्रीकृष्ण जन्मभूमि पर मंदिर और काशी में भगवान शिव के मंदिर का नवोत्थान शुरू हो तभी वह (वासुदेवानंद सरस्वती) अपने शरीर का परित्याग करें। इस अवसर पर ब्रह्मलीन महंत अवेद्यनाथ से जुड़े अपने संस्मरण सुनाते हुए शंकराचार्य ने कहा कि महंत जी की सरलता, सहृदयता व सर्वजनप्रियता का बखान कर पाना मुश्किल है। कहा कि वर्ष 1991 में वह गोरखनाथ मंदिर आए थे। एक स्थान पर पूजा करते देख महंत अवेद्यनाथ ने उनसे विशिष्ट स्थान पर पूजा करने का अनुरोध किया। वासुदेवानंद जी द्वारा ठिठोली करते हुए यह कहने पर कि तब तो यहां की गद्दी भी मेरी हो जाएगी, महंत जी ने सहज ही कह दिया, महाराज यह तो आपकी ही है। शंकराचार्य स्वामी वासुदेवानन्द सरस्वती के पूर्व वशिष्ठ आश्रम अयोध्या से आए पूर्व सांसद डॉ रामविलास वेदांती ने भी अपने संबोधन में कहा कि मथुरा व काशी में भव्य मंदिर का निर्माण भी योगी आदित्यनाथ के मुख्यमंत्री रहते संभव होगा। उन्होंने योगी आदित्यनाथ को धर्म व संस्कृति की रक्षा के लिए महायोगी गोरखनाथ द्वारा भेजा गया दूत बताता। ब्रह्मलीन महंत अवेद्यनाथ का स्मरण करते हुए डॉ वेदांती ने कहा कि सभी संतों को एक मंच पर लाने का श्रेय ब्रह्मलीन महंत जी को ही है। उन्होंने राम मंदिर आंदोलन का नेतृत्व उस समय स्वीकार किया जब कांग्रेस सरकार के डर से कोई इसके लिए तैयार नहीं हो रहा था।

इस अवसर पर अपने संबोधन में अलवर के सांसद और रोहतक के अस्थल बोहर पीठ के महंत बालकनाथ ने कहा कि गोरक्षपीठ रामराज्य स्थापना की संकल्प भूमि है और इस पीठ के ब्रह्मलीन महंतद्वय समूची मानवता के प्रेरणा पुंज। श्रद्धांजलि समारोह में दिगम्बर अखाड़ा (अयोध्या) के महंत सुरेश दास, बड़ौदा (गुजरात) से आए महंत गंगादास, कटक (ओडिशा) से आए महंत शिवनाथ व नागपुर, महाराष्ट्र से पधारे स्वामी जितेन्द्रनाथ ने भी विचार व्यक्त किए। इसी क्रम में सांसद रविकिशन शुक्ल, राज्यसभा सदस्य डॉ राधामोहन दास अग्रवाल, भाजपा के क्षेत्रीय अध्यक्ष एवं एमएलसी डॉ धर्मेंद्र सिंह, महापौर सीताराम जायसवाल, गोरखपुर ग्रामीण के विधायक विपिन सिंह, सहजनवा के विधायक प्रदीप शुक्ल, राज्य महिला आयोग की पूर्व उपाध्यक्ष श्रीमती अंजू चौधरी, व्यापार मंडल से सुरेंद्र सिंह मुन्ना, चौंबर ऑफ इंडस्ट्रीज के पूर्व अध्यक्ष एसके अग्रवाल, सिंधी समाज से लक्ष्मण नारंग ने भी ब्रह्मलीन महंत द्वय के प्रति श्रद्धांजलि अर्पित की।

बुद्ध का संदेश
(हिन्दी दैनिक समाचार पत्र)
स्वत्वाधिकारी, प्रकाशक एवं मुद्रक श्रीमती पुष्पा शर्मा द्वारा बुद्धा प्रिन्टर्स , ज्योति नगर मधुकरपुर, निकट–हीरो होण्डा एजेन्सी, जनपद–सिद्धार्थनगर (उ0प्र0) 272207 से मुद्रित एवं प्रकाशित।
आर.एन.आई. नं.–UPHIN/2012/49458
संस्थापक
स्व. के.सी. शर्मा
सम्पादक
राजेश कुमार शर्मा
9415163471, 9453824459
दैनिक बुद्ध का संदेश
9795951917,9415163471
@budhakasandesh
budhakasandeshnews@gmail.com
www.budhakasandesh.com
इस अंक में प्रकाशित समस्त समाचारों के चयन एवं सम्पादन हेतु पी.आर.बी.एक्ट. के अन्तर्गत उत्तरदायी तथा इनसे उत्पन समस्त विवाद जनपद–सिद्धार्थनगर न्यायालय के अधीन ही मान्य होगा।

जनपद सिद्धार्थनगर के महत्वपूर्ण नम्बर

जिलाधिकारी	मो0:– 9454417530
मुख्य विकास अधिकारी	मो0:– 9454464749
एस डीएम नौगढ़	मो0:– 9454415936
एस डीएम बांसी	मो0:– 9454415937
एस डीएम डुमरियागंज	मो0:– 9454415939
एस डीएम इटवा	मो0:– 9454415939
एस डीएम शोहरतगढ़	मो0:– 9454415940
पुलिस अधीक्षक	मो0:– 9454400305
थाना मोहाना	मो0:– 9454404239
थाना जोगिया उदयपुर	मो0:– 9454404235
थाना गोलौरा	मो0:– 9454404233
थाना पथरा बाजार	मो0:– 9454404240
थाना त्रिलोकपुर	मो0:– 9454404243
थाना उसका बाजार	मो0:– 9454404244

राष्ट्रीय दैनिक
बुद्ध का संदेश

थाना शोहरतगढ़	मो0:– 9454404241
थाना खेसरहा	मो0:– 9454404236
थाना इटवा	मो0:– 9454404234
थाना चिल्हिया	मो0:– 9454404229
थाना ढेबरूआ	मो0:– 9454404230
थाना भवानीगंज	मो0:– 9454404228
थाना मिश्रौलिया	मो0:– 9454404238
थाना सि0नगर	मो0:– 9454404242
थाना डुमरियागंज	मो0:– 9454404232
थाना लोटन	मो0:– 9454404237
महिला थाना	मो0:– 9454404891

जरूरी हैं एक अंतराल बाद कान के मैल की सफाई, आजमाए ये आसान घरेलू नुस्खें

कान हमारे शरीर का एक संवेदनशील अंग हैं जिसके सही से काम करने के लिए जरूरी हैं कि इसकी समय–समय पर सफाई हो। कान में मैल जमना एक सामान्य बात है जो कि वैक्स कहलाता हैं। वैक्स एक प्राकृतिक तत्व है जिससे कान के परदे की रक्षा होती है, लेकिन जरूरत से ज्यादा होने पर सुनने की क्षमता कम होने लगती हैं। अगर आप समय पर कानों को साफ नहीं करते हैं। तो आपको कान में दर्द, खुजली, जलन या बहरापन जैसी समस्याएं हो सकती है। अब समस्या आती हैं कि कान की सफाई करें कैसे कि कान को भी नुकसान ना पहुंचे। इसके लिए आप कुछ घरेलू उपाय का सहारा ले सकते हैं। आइए जानें उन घरेलू नुस्खों के बारे में जिनसे कान की सफाई की जा सकती है।

नमक का पानी

नमक का पानी सबसे अच्छा ईयर वैक्स रिमूवल सॉल्यूशन है जो घर पर इस्तेमाल किया जा सकता है। यह कान के अंदर जमा वैक्स को नरम बनाता है जिससे इसे साफ करना आसान हो जाता है। इसके लिए आधा कप गर्म पानी में एक चम्मच नमक मिलाएं और नमक को पानी में अच्छी तरह से घुल जाने दें। एक कॉटन बॉल लें और कान में इससे नमक का पानी डालें। 3 से 5 मिनट तक इंतजार करें उसके बाद सिर को विपरीत दिशा में झुलाएं इससे पानी बाहर निकल आएगा, साथ ही कान में जमा वैक्स भी निकल जाएगा।

जैतून का तेलः कान के वैक्स को हटाने के लिए जैतून का तेल एक आम उपाय बताया गया है। यह कान की झिल्लियों को प्रोटेक्शन देने के साथ कान को पानी पैदा करने वाले संक्रमणों से बचाता है। जैतून का तेल भी कान के वैक्स को नरम करने में मदद करता है और इससे वैक्स आसानी से बाहर निकल आता है। इसके एंटीसेप्टिक गुणों के साथ, यह कान के संक्रमण से लडने में भी सहायक है। जैतून के तेल को थोड़ा गर्म करें और एक ड्रॉपर का उपयोग करके कान में तीन से चार बूंदें डालें। इसे दस मिनट तक ऐसे ही रहने दें ताकि कान का वैक्स मुलायम हो जाए। वैक्स मुलायम होकर आसानी से निकल जाता है। अपने सिर को बगल में झुकाएं और तेल और मोम को कॉटन से हटा दें।

सेब का सिरकाः एक चम्मच सिरका और एक चम्मच पानी लें। दोनों चीजों को मिक्स कर के कान में डाल दें। अगर एक बार में इस नुस्खे से कान का मैल साफ नहीं होता है तो आप अगले दिन दोबारा इसका इस्तेमाल कर सकते हैं।

प्याज का रस

प्याज का रस कान साफ करने के लिए आसान उपाय है। इसके लिए प्याज को हल्की भाप में पकाकर या भूनकर इसका रस निकाल लें। आप प्याज को डायरेक्ट मिक्सी में पीसकर भी इस्तेमाल कर सकती हैं। इसके लिए प्याज के रस को हल्का गुनगुना करके कान में किसी ड्रॉपर या कॉटन की सहायता से डालें। कान को विपरीत दिशा में झुकाएं और वापस उसी दिशा में झुकाकर वैक्स बाहर निकाल दें।

लहसुन और नारियल तेल

एक पैन में नारियल का तेल लगभग 3 चम्मच डालकर गैस पर गरम करने के लिए रख दें। इसमें लहसुन की 3 से 4 कलियाँ छीलकर और थोड़ी सी कुचलकर डालें। इसे तब तक गरम होने दें जब तक कि लहसुन भूरा न हो जाए। अब इसे गैस से हटाकर गुनगुना होने तक इंतजार करें। तेल गुनगुना हो जाए तब इस तेल की कुछ बूंदें कान में डालकर रूई से कान को बंद कर दें। थोड़ी देर बाद रुई को कान से हटा दें। सारा वैक्स फूलकर बाहर निकल आएगा।

बेबी ऑयल

एक ड्रॉपर लें और उसमें बेबी ऑयल भर दें। कान में 3 से 4 बूंदें बेबी ऑयल डालें और कान को रूई से बंद कर दें। 5 मिनट बाद उस रूई को निकाल दें। आप ऐसा दिन में एक या दो बार कर सकते हैं। इससे कान का मैल अपने आप निकल कर बाहर आ जाता है।

गुनगुना सरसों का तेल

सरसों के तेल को हल्का गुनगुना करके किसी ड्रॉपर या रुई से कान में डालें और थोड़ी देर बाद कान को नीचे झुकाकर पूरा वैक्स और तेल बाहर निकाल दें। ऐसा करने से कान अच्छी तरह से साफ हो जाता है।

बादाम का तेल

बादाम का तेल कान का मैल साफ करने के लिए सबसे प्राचीन तरीका है। आप पहले बादाम के तेल को गर्म करें और जब यह गुनगुना रह जाए, तो इसके तेल की तीन से चार बूंद कान में डालकर कुछ मिनट के लिए छोड़ दें। जिससे कान का मैल मुलायम हो जाएगा और फिर आप उसे आसानी से निकाल सकते हैं।

शेशम माइक–इल फातिमा में मुख्य भूमिका निभाएंगी कल्याणी प्रियदर्शन

अभिनेत्री कल्याणी प्रियदर्शन, जो तमिल और मलयालम दोनों फिल्म उद्योगों में लगातार हिट फिल्में दे रही हैं, अगली बार

निर्देशक मनु सी. कुमार की आगामी मलयालम फिल्म शेशम माइक–इल फातिमा में मुख्य भूमिका निभाती नजर आएंगी।

14 सितंबर से फ्लोर पर जाने वाली इस फिल्म का निर्माण रूट एंड पैशन स्टूडियो द्वारा किया जाना है। फिल्म के बारे में घोषणा करने और इस पर अपने विचार साझा करने के लिए इंस्टाग्राम पर अभिनेत्री कल्याणी प्रियदर्शन ने लिखा, शेशम माइक–इल फातिमा – यह मजेदार होगा।

उन सभी का धन्यवाद जो हमें आशीर्वाद देने के लिए पहुंचे।और बिना किसी हिचकिचाहट के इसमें अपनी आवाज देने के लिए दुलकर सलमान का बहुत–बहुत धन्यवाद। धन्यवाद डी, समर्थन और उत्साह के ऐसे स्तंभ होने के लिए।

इस फिल्म के लिए संगीत निर्देशक के रूप में हेशम अब्दुल वहाब को लिया गया है, जिसकी छायांकन संथाना कृष्णन द्वारा की जाएगी। किरण दास फिल्म के संपादक हैं और निमेश थनूर कला निर्देशन के प्रभारी होंगे।

फैंस के इंतजार को गुरु ने किया खत्म, रिलीज किया अपना नया गाना

भूषण कुमार के सहयोग से गुरु रंधावा ने अपने एल्बम मैन ऑफ द मून का एक और सक्सेसफुल ट्रैक फेक लव के म्यूजिक वीडियो आज रिलीज कर दिया गया है। संजॉय द्वारा कंपोज्ड और मिक्स्ड , रॉयल मान और अमर संधू के गीतों के साथ और रयान शनहान द्वारा महारत हासिल, फेक लव की एक बहुत ही अलग साउंड है जो इसके पेसी और थ्रिलिंग संगीत वीडियो में परिलक्षित हो रही है।

रूपन बल द्वारा निर्देशित और अनमोल रैना द्वारा डिजाइन और संकल्पित, गुरु के फेक लव के संगीत वीडियो में गुरु के साथ–साथ संजय और अमर संधू भी दिखाई दे रहा है , जो एक अप्रत्याशित मोड़ ले लेता है। इस गाने को इंटरनेशनल लोकेशन सोफिया, बुल्गारिया में शूट किया गया है , इसमें एक नई कहानी के साथ डिफरेंट साइट को एक्सप्लोर कर दिया है। हर बिट को एक इंटरनेशनल संगीत वीडियो की तरह देखते हुए, इस गाने के विसुअल इफेक्ट्स और शार्प एडिटिंग का काम दिलप्रीत ने कर दिया है। भूषण कुमार का इस बारें में कहना है कि, फेक लव एक प्रोग्रेसिव म्यूजिक ट्रैक है और ये म्यूजिक वीडियो भी उस गति को दर्शा रखा है । इस गाने की स्टोरी लाइन आप को निश्चित रूप से अपनी और आकर्षित करने वाली है।

अपारशक्ति ने धोखा–राउंड डी कॉर्नर में अपनी भूमिका के लिए कश्मीरी लहजे का लिया प्रशिक्षण

बॉलीवुड अभिनेता अपारशक्ति खुराना, जो एक कश्मीरी का किरदार निभा रहे हैं, ने फिल्म धोखा– राउंड डी कॉर्नर के उच्चारण को सही करने के लिए गहन प्रशिक्षण लिया। उन्हें इसके

लिए एक कश्मीरी ट्यूटर द्वारा प्रशिक्षित किया जा रहा था। अपारशक्ति कहते हैं, धोखा एक बहुत ही अलग तरह की फिल्म है। मैं इसे उसी तरह नहीं ले सकता था जैसे मैंने अपने अन्य पात्रों से संपर्क किया था। मैं एक कश्मीरी की भूमिका निभा रहा हूं जो मैंने पहले नहीं किया है और उनका उच्चारण बहुत अलग है, जो उनके लिए बहुत ही अनोखा है। एक चरित्र का सही उच्चारण करना इसके लिए बहुत महत्वपूर्ण था। मैं एक कश्मीरी ट्यूटर के लिए गया था इसे और अधिक प्रामाणिक रखने के लिए। यह फिल्म कूकी गुलाटी द्वारा निर्देशित एक सस्पेंस थ्रिलर है, जिसमें आर माधवन, खुशाली कुमार और दर्शन कुमार भी प्रमुख भूमिकाओं में हैं।

जरूरी नहीं सिर्फ फायदा ही करें केले का सेवन, हो सकते हैं ये नुकसान

अच्छी सेहत के लिए अपने खानपान में पोषण से भरपूर आहार को शामिल करना चाहिए। इसके लिए कई लोग अपनी दिनचर्या में केले को शामिल करते हैं। इसमें विटामिन–ए, बी, सी, बी6, मैग्नीशियम और पोटैशियम जैसे पोषक तत्व पाए जाते हैं जो शरीर को फायदा पहुंचाने का काम करते हैं। इसका सेवन आप स्मूदी, शेक, केक और अन्य विकल्प के तौर पर कर सकते हैं। लेकिन जरूरी नहीं कि केले का सेवन हमेशा ही फायदा पहुंचाए। इसमें कोई दो राय नहीं कि जरूरत से ज्यादा कोई भी चीज आपकी सेहत के लिए हानिकारक होती है। केले खाने के नुकसान के बारे में जानकर आप भी इसके सेवन के बारे में जरूर सोचेंगे। आइए जानते हैं केले का जरूरत से ज्यादा सेवन करने पर होने वाले नुकसान के बारे में...

बढ़ सकती है माइग्रेन की दिक्कत

अगर आपको बार–बार माइग्रेन अटैक्स आते हैं तो केला अपनी डाइट से आज ही हटा दें। क्योंकि केले में टायरामाइन नामक पदार्थ पाया जाता है, जिससे माइग्रेन का दर्द बढ़ता है। वहीं, केले के छिलके में गूदे से 10 गुना ज्यादा टायरामाइन पाया जाता है। अगर इसे आप खा भी रहे हों तो इसके छिलके के साथ मौजूद रेशों को भी अच्छे ने निकाल कर खाएं।

पोषक तत्वों में कमीः हमारे शरीर को सही तरीके से काम करने के लिए कई सारे पोषक तत्वों की जरूरत होती है। भले ही केला खाने से आपका पेट फुल रहता हो लेकिन इसकी वजह से आपके शरीर को दूसरे हेल्दी फूड्स को खाने और पचाने के लिए जगह नहीं मिलती। इसी वजह से बहुत से लोगों के शरीर में पोषक तत्वों की कमी हो जाती है।

बढ़ सकता हैं शुगर लेवल

केले का ज्यादा सेवन करने से शरीर में ब्लड शुगर का लेवल बढ़ सकता है। केले में नेचुरल शुगर होता है जिसके चलते शुगर लेवल बढने की दिक्कत हो सकती है। जिन लोगों को डायबिटीज है उन्हें केला खाने से परहेज करना चाहिए।

हो सकती है एलर्जी

अगर आप किसी तरह की एलर्जी की परेशानी से जूझ रहे हैं, तो आपको केले खाने से बचना चाहिए। क्योंकि केले खाने से आपकी एलर्जी की दिक्कत बढ़ सकती है और आपको परेशानी का सामना करना पड़ सकता है।

हो सकती है कब्ज

कब्ज की दिक्कत भी आपको केले खाने से हो सकती है। केले में टैनिट एसिड होता है जो पाचन तंत्र पर बुरा असर डालता है। इसलिए जिन लोगों को कब्ज की दिक्कत रहती हो उनको ज्यादा केले खाने से बचना चाहिए। इसके साथ ही केले में फ्रक्टोज भी मौजूद होता है जिसकी वजह से आपको केला खाने से पेट में गैस भी हो सकती है।

बढ़ सकता हैं वजन

केला एक हाई कैलोरी फूड है, जिसका सेवन आपको वजन बढ़ाने में मदद करता है। जो लोग डाइटिंग करना पसंद करते हैं उन लोगों को केले के सेवन से बचना चाहिए। जी हां, केले का सेवन आपके लिए फायदेमंद होता है लेकिन 300 कैलोरी तक यानी के सिर्फ 2 केले। अगर आप इससे ज्यादा का सेवन करते हैं तो ये आपके स्वास्थ्य के लिए हानिकारक हो सकता है

बीमार हो सकता हैं दिल

किसी व्यक्ति को अगर हार्ट से सम्बंधित परेशानी है तो उस व्यक्ति को भी केले का सेवन नही करना चाहिए। ऐसा इसलिए क्योंकि केले में पोटेशियम की मात्रा अधिक पाई जाती है जिसकी वजह से हाइपरकेलेमिया होने का खतरा होता है। वहीं केले में स्टार्च की मात्रा भी काफी होती है जिससे आपको दांतो में भी समस्या हो सकती है।

नर्वस के लिए नुकसानदायक

केला में भरपूर मात्रा में विटामिन बी6 होता है। केले का ज्यादा सेवन करने से नर्वस डैमेज का खतरा बढ़ जाता है। जो लोग रोजाना वर्कआउट करते हैं उन्हें इससे खतरा नहीं लेकिन एक्सरसाइज न करने वालों को ज्यादा केले खाने से बचना चाहिए।